ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-18 दिसम्बर-II, 2016 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

सुख के लिए हो आध्यात्मिकता का समावेश

साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग प्रभाग द्वारा 'वाह ज़िंदगी वाह' विषय पर त्रिदिवसीय कॉन्फ्रेन्स कम मेडिटेशन रिट्रीट का सफल आयोजन

शांतिवन। मनुष्य अपने जीवन में सुख और शांति के लिए, भौतिक विकास के लिए पूरा जीवन बीता देता है। परन्तु यदि जीवन में सम्पूर्ण सुख चाहिए तो वैज्ञानिक आधार पर भौतिक विकास में आध्यात्मिकता का समावेश ज़रूरी है। इसके बिना विकास तो होगा, परन्तु सुख और आनन्द का हमेशा अभाव रहेगा। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने व्यक्त किये। वे वैज्ञानिक एवं अभियन्ता प्रभाग द्वारा शांतिवन परिसर में 'वाह जिन्दगी वाह' विषय पर आयोजित सम्मेलन में व्यक्त किये।

दादी ने सम्मेलन में सहभागियों से आह्वान किया कि मौजूदा समय में विज्ञान के साथ अध्यात्म को साथ लेकर चलें। पिछले कुछ वर्षों में आध्यात्मिकता और योग के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है। मनुष्य की वाह ज़िन्दगी वाह तभी हो सकती है जब वह आध्यात्मिकता और राजयोग को जीवन में शामिलकरेगा।

'भारत और नेपाल एक आध्यात्मिक देश है। परन्तु यह देखने में आया है कि विश्व के कई देशों में विकास तो हुआ परन्तु मानवीय मूल्यों का अकाल दु:खदायी रहा है। इसलिए आध्यात्मिकता को साथ रखना ज़रूरी है' - **नेपाल के शहरी विकास एवं भवन निर्माण विभाग के उपमहानिदेशक मोनी राम गेलाल।**

सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी, महासचिव ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मृत्युंजय, प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला तथा अतिथिगण।

आपातकाल प्रबन्धन संस्थान भोपाल के निदेशक डॉ. राकेश दूबे ने कहा कि आपात काल की स्थिति के समाधान के लिए आन्तरिक आध्यात्मिक विकास की आवश्यकता है। बाद में तो सारी चीज़े अपने आप ही मैनेज हो जाती हैं।

'विज्ञान और अध्यात्म के सहयोग से ही मनुष्य की वाह वाह ज़िन्दगी बन सकती है। अध्यात्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है। आज पूरे विश्व में जिस तरह से तेज़ी से विकास हुआ है, यह ज़रूरी है, परन्तु आध्यात्मिकता के बिना मूल्यों की कमी मानव समाज को विनाश की ओर ढ़केल रही है' - **ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर।**

शहरी विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव सम्भू केसी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था जिस राजयोग की शिक्षा दे रही है वह केवल विज्ञान ही नहीं बल्कि सभी वर्गों के लोगों के लिए ज़रूरी है। यह सम्मेलन कई मायनों में अहम होगा।

विज्ञान एवं अभियन्ता प्रभाग की अध्यक्ष ब्र.कु. सरला, राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. भरत, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने अपने विचार व्यक्त किये।

यातायात एवं परिवहन प्रभाग ने बनाई सुरक्षा जागृति योजना

सम्भल कर चलें, औरों को भी सम्भालें | **स्वस्थ हो मन, सुरक्षित जीवन,** | **जीवन की सफलता सुरक्षा में है, रफ्तार में नहीं**

चण्डीगढ़। वसुधैव-कुटुम्बकम की अवधारणा के अनुरूप समाज एक वृहद परिवार के समान है। जैसे हम अपने छोटे से परिवार की सुरक्षा, स्वास्थ्य और सफलता के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं वैसे ही इस वृहद परिवार के हर सदस्य की सुरक्षा के लिए भी हर संभव प्रयास करें, यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

अभियान का मुख्य उद्देश्य

- जन साधारण में सड़क सुरक्षित नियमों की जगृति लाना
- व्यसन मुक्ति के प्रति जागृति लाना
- यातायात एवं पर्यटन क्षेत्र के लोगों को तनावमुक्त जीवन शैली अपनाने हेतु सबल बनाना।
- इन क्षेत्रों के लोगों को आध्यात्मिक जागृति से खुशहाल बनाना ।
- परिवार समाज और विश्व भर में जीवन यात्रा की सफलता के लिए वचनबद्ध हो जानकारी देना ।

लेकिन आये दिन होने वाली तनावपूर्ण घटनाओं एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना करते समय आंतरिक आध्यात्मिक शक्तियों के अभाव में मन अस्थिर और जीवन असुरक्षित होता जा रहा है। यह कटु सत्य है कि सड़क दुर्घटनाओं की संख्या और उनमें मृत्यु को प्राप्त होने वालों की संख्या के अनुसार तो भारत विश्व में अग्रिम पंक्ति में है। हवाई जहाज हो या रेल, ट्रक हो या बस, कार हो या टेम्पो, आये दिन हो रहे हादसों का मुख्य कारण तनाव ग्रस्त मन, नशे की हालत में वाहन चलाना, कार्यशैली में दोष या नियंत्रण से ज़्यादा रफ्तार ही होता है। जल्दी से जल्दी इच्छित सफलता के प्रयास में मानवीय मूल्यों को ताक पर रखना ही तनाव और असफलता का कारण है।

सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कविता। मंचासीन हैं, ब्र.कु. सारिका, ब्र.कु. अमीरचंद, जज दया चौधरी, ब्र.कु. दिव्यप्रभा, अमित तलवार, ब्र.कु. सुरेश तथा ब्र.कु. गिरीश।

ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था रजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन के यातायात एवं परिवहन प्रभाग ने बनाई यातायात सुरक्षा जागृति हेतु एक अखिल भारतीय योजना।

इस अभियान का चंडीगढ़ 33 सेक्टर से आरंभ होकर अमृतसर में समापन होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट की माननीय जज श्रीमती दया चौधरी और यातायात एवं परिवहन विभाग चण्डीगढ़ के डायरेक्टर अमित तलवार रहे।

मुम्बई से आए मुख्य वक्ता ब्र.कु. गिरीश और वक्ता ब्र.कु. सारिका ने सामाजिक दिक्कतों के चलते अपने आप में बदलाव लाने के फायदे एवं सरल राजयोग विधि के बारे में बताया जिससे परमात्मा से जुड़ते हुए न केवल हम खुद, बल्कि समाज को भी प्रत्यक्ष रूप से सुरक्षा पहुंचा सकते हैं।

ब्र.कु. दिव्या ने अभियान का उद्देश्य और कविता बहन ने इससे संबंधित UN के सभी प्रोजेक्टस के बारे में बताया जिसमें ब्रह्माकुमारी संस्था कई वर्षों से नियमित अपना योगदान दे रही है। इसी शुभ अवसर पर ब.कु. अमीर चंद और ब्र.कु. उत्तरा ने सभी को शुभाशीष दी। सभी अतिथियों ने अभियान की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

मानव आत्म सम्मान से दूर क्यों !!!

मानव का यह जन्म ईश्वरीय देन है। सबके साथ प्रेम, मैत्री और नि:स्वार्थ भाव से रहना यह ईश्वर का फरमान है, लेकिन मानव अपनी स्वार्थ वृत्ति व संकुचित विचारों के कारण वह सिर्फ थोड़े से लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाकर रहता है। इसके लिए स्वयं को जानना, पहचानना, समझना तथा आत्ममंथन करना आवश्यक है। मकान की नींव मज़बूत करने के लिए ईंट, पत्थर, सीमेंट और लौह खण्ड की चिंता करने वाले हम क्या जीवन की नींव को मज़बूत करने के लिए चिंतित रहते हैं। स्वयं से न जुड़े रहना ही अनेक दु:खों का कारण है। हमें यह समझना चाहिए कि जीवन सिर्फ मानने के लिए नहीं है बल्कि स्वयं को जानने के लिए भी है। ऐसी समझ से जीवन की नींव को मज़बूत करने के लिए अपने व्यस्त जीवन में से स्वयं के लिए थोड़ा समय निकालना आवश्यक है।

- ब्र. कु. गंगाधर

जीवन की मज़बूत नींव बनाने का पहला आधार है खुद को जानना। अपनी पहचान, दिये गये बोयोडाटा या विज़िटिंग कार्ड में दिये गये विभिन्न मर्तबे तक ही सीमित नहीं है। ये वर्णन तो दूसरों को देने के लिए है। स्वयं को पहचानने का बायोडाटा तैयार करने के लिए पूरी ज़िंदगी बीत जाती है। फिर भी अंत घड़ी तक मानव स्वयं को पहचान नहीं पाता। ज़िंदगी के हिसाब में स्वयं को जानने-पहचानने की अग्रिमता सबसे महत्वपूर्ण है।

अपना कैसा बायोडाटा तैयार करना है यह कभी सोचा है? या मेरा अभी का बायोडाटा कैसा है ये देखा है? मेरा स्वभाव कैसा है? मेरे स्वभाव की मर्यादायें, निर्णय लेने में मैं क्यों पीछे हो जाता हूँ? मेरी चाल-चलन कभी कोई-कोई प्रसंग में नॉर्मल क्यों नहीं रहती। स्वयं पर मेरा नियंत्रण क्यों नहीं रहता? मेरी जीवन प्रणाली किस ढंग की है, मैं कौन से संयोग में मूल्यनिष्ठ रह सकता हूँ, कौन से संयोग में मूल्य को दरकिनार कर देता हूँ, बाहर के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार और घर के परिवार के साथ तुच्छ क्यों बना रहता हूँ? मैं मेरा मन, मेरा शरीर, मेरी आत्मा और मेरे स्वास्थ्य का सम्मान बनाये रख सकता हूँ? आज मानव मात्र में जेब का वज़न बढ़ाने में रुचि है और शरीर का वज़न घटाने में रुचि है, लेकिन उतनी ही रुचि उनके कम होते आत्म-प्रतिष्ठा की नहीं रहती।

स्वयं के सम्मान के प्रति श्रेष्ठ अभिगम बनाये रखना, यही शूरवीरता है। शरीर को सुंदर बनाने के लिए बाज़ार से साधन-सामग्री मिल सकती है, लेकिन मन को सुंदर बनाने के लिए साधनों का निर्माण अंदर की वर्कशॉप में ही करना होता है। साथ ही अपनी मान्यताएं तथा विचारों को भी सदा श्रेष्ठ एवं मूल्यवान बनाना चाहिए। आज मानव जगत के साथ जुड़ने वाले होशियार भी स्वयं के प्रति जुड़ने में बहुत कायर होते हैं। यह कायरता उन्हें रिंचक मात्र भी ज़िंदगी भर परेशान नहीं करती।

स्वार्थ प्रेरित कार्यो में ज़्यादा और त्याग भावना में कम, ये सांसारिक जीवन का 'संसार दर्शन' है। संसार में बहुत ही कम पवित्र आत्माओं को छोड़कर मनुष्य अज्ञात मोक्ष की चिंता करता है। लेकिन स्वयं को 'मुक्त' रखने की चिंता रिंचक मात्र भी नहीं करता। प्रत्येक पल मुक्ति का एहसास, यह पार्थिव जीवन में मिला हुआ दुर्लभ मोक्ष है। प्रतिकूल परिस्थिति, विभिन्न समस्याओं में, कठिनाइयों में, बिगड़े रिश्तों में तथा स्वयं की संकीर्णता की कारागार से मुक्त रख मन की प्रसन्नता व आनंदानुभूति बनी रहे यह बहुत बड़ी उपलब्धि व सिद्धि है। हमने इस धरा पर रहकर क्या पाया, उससे ज़्यादा नष्ट कर दिया उसका हिसाब करना चाहिए।

जो स्वयं को पहचानता है वो खुद की आसक्ति का गुलाम नहीं होता। वह जानता है कि आसक्ति ही असंतोष का सृजन करती है।

ज़िंदगी का सबसे बड़ा शत्रु है रोज़मरा की ज़िंदगी के चक्रव्यूह में फँसे रहना। मानव स्वयं ही मशीन बनने की कोशिश करता है तो जीवन में यांत्रिकता के सिवाए और क्या रह जाता? जो स्वयं को पहचानता है वह नया उमंग-उत्साह

- शेष पेज 8 पर

मन शांत है तो बुद्धि शुद्ध है

जो सिस्टम यज्ञ से बनती है उसे सारे विश्व में फॉलो करना सहज हो जाता है। भले कोई भी देश में रहते हैं पर बुद्धियोग में बाबा, मुरली, मधुबन। बाबा के जो भी ब्राह्मण बच्चे हैं उनको भविष्य के लिये अच्छी कमाई करने का अभी भाग्य है। सभा में बैठे हुए इतने सब भाई बहनें शान्ति में बैठे हैं, यह शान्ति भी स्नेह भरी है। रूखी सूखी शान्ति नहीं है। स्नेह भरी शान्ति वायुमण्डल को शक्तिशाली बना देती है। बाबा कहता है बच्चे, हम कहते जी बाबा। बाबा हमारे से क्या चाहता है। विश्व की राजाई लेनी है, विश्व पर राज्य करने का भविष्य प्लान हमारे बाबा के पास ऐसा है, जो हम समझते हैं, हम ऊपर जाके बैठ नहीं जायेंगे। जल्दी नीचे आ जायेंगे। हम सबके दिल में क्या है? बाबा आया है हमको ले जाने लिये। कहाँ जायेंगे? 5 तत्वों से पार। हमारा घर कहाँ है? मूलवतन में बैठ जायेंगे क्या! देखो बाबा अव्यक्त हो करके भी अपनी शान्ति की शक्ति अव्यक्त रूप में हम आत्माओं को कैसे दे रहा है। हमारी भी दिल है कि बाबा जो हमारे से चाहता है, जो उसकी दिल में है, वह बाबा की दिल हम सब पूरी करें। हम सबके दिल में है एक दिलाराम। सब आत्मायें भाई भाई हैं। हम कहेंगे यह भाई की आत्मा है, यह बहन की आत्मा है। आत्मायें परमात्मा की सन्तान होने से निश्चय और नशा है हम कौन हैं और किसके हैं? सच बताओ कि यह नशा चढ़ा हुआ है? रात को सोते, सुबह को जागते भी यह घड़ी-घड़ी स्मृति आती है - मैं कौन हूँ, किसकी हूँ!

मैं कौन? तो लाइट हो जाते हैं, हल्के हो जाते हैं। मेरा कौन? तो शक्ति आ जाती है जैसे कि वर्से में बाबा ने कहा मुक्ति और जीवनमुक्ति। कोई भी पुरानी वा पराई बातों से मुक्ति, फिर जीवन सेवा में है, ऑटोमेटिक दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया। जो हम बाबा के, बाबा हमारा, सारे कल्प में यह नशा नहीं होगा। भले सारे कल्प में हम लोगों ने 84 का चक्र लगाया है, ब्रह्माकुमार तो अब बने हैं, पर सारे कल्प में जो हमारा पार्ट है, वन्डरफुल है। मन शान्त है तो बुद्धि शुद्ध है। शुद्ध शब्द को और कुछ अच्छा शब्द देना चाहिए। बहुत शुद्धि है।

यह डायमण्ड हॉल क्यों बना है! जब यहाँ याद का प्रोग्राम है तो बाहर में इधर उधर घूमने में, बातें करने में टाइम देना, यह बी.के. का काम नहीं है, क्योंकि ब्रह्माकुमारियाँ या ब्रह्माकुमारों को सारा विश्व जानता है। बाबा के पास कोई कोई आत्मायें बड़ी वन्डरफुल हैं। उनके सामने सब शक्तियाँ हाज़िर रहती हैं। सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति... यानी कोई बात हो तो उसकी डिटेल में नहीं जाना है। तो समेटने की शक्ति से कहेंगे सब अच्छा है। अच्छा-अच्छा कहके समेट लेंगे।

यहाँ पर जो शान्ति का वायुमण्डल है, शान्ति के साथ जो सच्चाई और प्रेम है, वह बड़ा सुखदाई है। दु:ख का नाम-निशान भी खत्म। ऐसे कौन-से भाई बहनें बैठे हैं जिन्होंने दु:ख का नाम-निशान खत्म किया है? दु:ख कभी नहीं होवे, क्योंकि यह समय है बाबा के नयनों में बैठने का माना अष्ट रत्नों में आने का। इसके लिए बड़ा सहज पुरुषार्थ है। बाबा का बनने से सभी का रंग अच्छा हो गया है। पवित्रता, मधुरता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता की विशेषतायें अगर हमारे जीवन में आ गयी तो जीवनमुक्त हैं। पुरानी बातों से मुक्ति ही जीवनमुक्ति है। भले सतयुग में होंगे परन्तु वहाँ ऐसे थोड़ेही बाबा बाबा करेंगे। यह टाइम संगम का दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया, मुख पीछे बोलता है पर दिल से निकलता है शुक्रिया बाबा आपका, जो आपने सच्ची शान्ति, प्रेम, सच्चाई जैसे वर्से में दे दी है, इससे ही अन्त मते सो गति होगी इसलिए मुझे खुशी है अन्त मते अच्छी होगी। ऐसी अन्त मते सो गति की तैयारी अभी पहले से ही करनी है। ना कोई अपना, ना कोई अपनी, हम हैं योगी लोग। ठीक है! कौन है मेरा! वह एक ऐसा है जो सबका है वो मेरा है, वन्डरफुल है मेरा बाबा। हमको अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। यह मेरा बाबा वन्डरफुल है। डिटैच बनने के लिये अटैचमेंट एक के साथ है। कोई अपना नहीं, कोई अपनी नहीं। डिटैच और लविंग नेचर प्रैक्टिकल लाइफ में बाबा ने हम सबको ऐसा सिखाया जो आज दिन तक काम आ रही है।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हमें सूक्ष्म रूप से सोचना, बोलना और देखना है

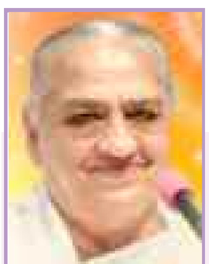
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

न मन वेस्ट जाए, न वाणी, न कर्म। मंज़िल भारी है तो पावरफुल इंजन बाबा ही चाहिए। हम मंदिर की मूर्ति, जितना समय मंदिर की सजावट पर देते, क्या उतना भी समय मूर्ति को स्वच्छ और सुन्दर बनाने में देते हैं? मुझे मंदिर बनना है या मूर्ति बनना है।

हम टीचर्स का पुरुषार्थ अब सूक्ष्म होना चाहिए। सूक्षम रूप से सोचना, बोलना और देखना एक ज़बरदस्त अनुभव है। पुरानी दुनिया से हमारा लंगर उठा हुआ हो।

अभी अशरीरी बनना है, उसके बगैर काम नहीं चलेगा। इसके लिए डबल बटन दबाना है और वो भी फुल पावर पर हो। योग की आदत हो। मन कमज़ोर न हो, उसका इलाज योग ही है। योग बल और मेडिकल बल दोनों ही चलाते हैं, लेकिन अध्यात्म नियम से करने से असर होता है। अपने ऊपर कंट्रोल चाहिए। ज्ञान योग में कमी पड़ जाती है। योग को साथ मिलाते हैं तो उसमें जान आता है। सवेरे ठीक टाइम पर उठें तो बस सब ठीक है। जब तक ज़िंदा हैं, ब्रह्मा कुमारी हैं, तब तक सब कुछ कर सकते हैं। कोई कहाँ भी हो, पुरुषार्थ की लगन लगी हुई हो। बाबा से प्यार है माना सभी से है। जो पढ़ाई में ठीक है वो अन्य बातों में भी ठीक होंगे। पढ़ाई पढ़ने का शौक होना चाहिए। तरीके से पढ़ना है। धक्के से पास नहीं होना। तंग नहीं होना, नहीं तो आदि पढ़ाई बुद्धि में और आधी व्यर्थ चली जायेगी। इस लाइफ से तंग नहीं होना। जो भी करो निश्चय से करो। कुछ भी करो लेकिन टाइम पर करो। नहीं तो लास्ट में पछतायेंगे। जो नंबर अच्छा लिया तो कहेंगे पढ़ा है। अगर ज़्यादा खर्च किया, इधर उधर घूमे तो पढ़ाई कहाँ हुई। अपने आपको टाइम कम तो नहीं देते? पेपर के टाइम पता पड़ेगा। सच्ची सच्ची पढ़ाई है या ऐसे ही है, ये थोड़े समय में पता पड़ेगा। अगर सच्चे हैं तो साहेब राज़ी है।

तो अभी सभी के दिल में कौन? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और यही दिल में बिठाने से जो बाबा हमसे चाहता है, बच्चे मेरे जैसे बन जायें, ऐसे ही सभी बाबा के समान, बाबा ने जो कहा हमने किया। एक-एक शब्द बाबा का अपने जीवन में समा करके हम भी बाबा के समान बनेंगे ज़रूर। बन भी रहे हैं और बनेंगे भी, क्योंकि बाबा से प्यार है ना। तो जिससे प्यार होता है उसको भूलना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। तो बाबा को हम दिल से प्यार करते हैं, बाबा से हम सबका दिल का 100 परसेंट प्यार है। जिससे कुछ मिले उससे ही तो प्यार होता है। तो बाबा ने हमें क्या क्या दे दिया, हमें ये मालूम ही नहीं था कि इतना हमको मिलेगा, लेकिन बाबा ने इतना दिया है जो हम सभी मालामाल हो गये हैं। तो बाबा के प्यार ने हम सबको भी सबका प्यारा बना दिया। सबके प्यारे हो गये हैं ना! किसी से वैर विरोध नहीं है। बाबा का साथ बहुत प्यारा है। एक बाबा शब्द में भी बहुत प्यार है। बाबा ने हम सबको इतना प्यार दिया है, इतनी मेहनत की है एक एक बच्चे के ऊपर जो बच्चा कभी भूल नहीं सकता। बाब ने जो प्यार दिया है हमको, इतना अच्छा बनाया है वो कभी भूल सकता है? नहीं भूल सकता है, यही प्यार हमको दो युग बहुत आनंद और प्रेम दिलायेगा। लेकिन उसके पहले अभी जो बाबा चाहता है वो करना है, बस। जो बाबा ने मुरली में कहा वो करने से बाबा जो चाहता है वो चाहना पूरी होती है, और हम भी बहुत खुश होते हैं। जब रात्रि को देखते हैं, जो बाबा ने कहा वही हमने सारा दिन किया तो अपने ऊपर भी बहुत खुशी होती है। अगर नहीं करते हैं तो शक्ल थोड़ी बदलती है। बाबा जो मुरली चलाते हैं, वो मुरली हमारे लिए बहुत अच्छा साधन है, बाबा ने कहा और हमने सारा दिन किया। हर मुरली में चारो ही सब्जेक्ट होते हैं, उन चारो सब्जेक्ट्स को ध्यान में रख करके हम उसी प्रमाण अपने आपको चलायें तो बहुत इज़ी है, मेहनत नहीं है।

जब ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डरना?

- ब्र.कु. सुमन,लखनऊ

जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना? कहने का तात्पर्य है कि जिस लक्ष्य को हमने लिया है, उसको प्राप्त करने के लिए जो ज़िम्मेदारी ली है, या मिली है, उसमें आने वाली परिस्थितियों में निर्भीक होकर चलते जाना। व्यवस्था या प्रशासन को बिना दोषी बनाये अपने पथ पर मंज़िल प्राप्त करने के लिए खुशी से चलते जाना। ओखली कहा ही जाता है जहाँ मूसलों का वार होना ही है, अर्थात् ओखली बनी ही है मूसलों के वार के लिए। बिना मूसलों के वार के ओखली की कोई सार्थकता नहीं। ओखली के प्राय: तीन कार्य होते हैं, किसी चीज़ को रिफाइन करना, चमकदार बनाना और महीन करना। ओखली में ऐसे ही मूसल नहीं पड़ते, पर जब कोई वस्तु को इन तीनों में से कोई भी प्रक्रिया से गुज़ारना हो तो ही मूसलों का वार होता है। इसी प्रकार संसार में भी जिसने कुछ धारा से अलग अर्थात् श्रेष्ठ, शुभ या नवीन कार्य करना चाहा, तो परीक्षाओं के हैमर तो लगने ही हैं। जिसने भी ओखली में सिर दिया, उसको अगर ये बात पता होती है, अर्थात् वह अनुभवी होता है तो वह अपनी दृढ़ता एवं हिम्मत के साथ अनेक वारों को सहन करता हुआ निरंतर आगे की ओर चलता जाता है। ना ही किसी से शिकायत, ना ही वापस लौटने का संकल्प।

बहादुर रणभूमि में कभी पीठ नहीं दिखाता, खेत रह जाता है पर कायर नहीं बनता। धान जब ओखली में पड़ता है तो चावल बनकर निकलता है, और गेहूँ को जब ओखली में डालकर उसका छिलका उतारा जाता है तो उसमें शाइनिंग आ जाती है, जबकि साधारणतया लोग गेहूँ के छिलके से अनभिज्ञ ही रहते हैं। जब ओखली में चीज़ पड़ती है तो मूसलों के वार करने के लिए ही पड़ती है, तब यह सोचना कि मूसलों से बच जायें, असंभव है। इसी प्रकार जब हमने संसार में विकारों की आग में जल रहे जनमानस को बचाने की मुहिम में पदार्पण कर ही लिया है तो थोड़ा बहुत तो सेक आयेगा ही, उससे क्या डरना? जब पवित्रता के पथ पर चल ही पड़े हैं तो अपने ही 63 जन्मों के संस्कारों के साथ समाज की अवहेलना एवं छींटाकसी तो सुननी ही पड़ेगी। चाहे नवनिर्माण या नवीनीकरण, दोनों के लिए धीरज एवं सहन करने की शक्ति, इन दो शक्तियों की अत्यधिक आवश्यकता होगी ही होगी। लेकिन हमें इस बात का गर्व होना चाहिए कि हम एक नेक काम ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक नये समाज की स्थापना कर रहे हैं, तो हमें क्या-क्या करना पड़ रहा है व कितना सहन करना पड़ रहा है इसकी क्या फिकर! जब किसी धर्म स्थापक ने संसार की पीड़ा को देखकर अपनी अंतस की आवाज़ को सुनकर एक नवीन विचारधारा से जनमानस के ज़ख्मों पर कुछ मरहम लगाने की कोशिश की तो संसार से उन्हें अनेक दर्द व वेदनायें ही मिलीं, लेकिन वे इन बातों को रास्ते की बाधा मानकर रुके नहीं, बल्कि उनकी लगन और बढ़ गयी और संसार से विरक्ति का माध्यम बनी, और अंत में जितना वे इन चीज़ों से बेपरवाह हो चलते चले, उतना ही उनकी मत को मज़बूती मिली और उन्हें प्रसिद्धि।

इसी प्रकार ब्रह्मा बाप भी जैसे ही परमात्म श्रीमत का अनुसरण कर, उसकी मत पर चले तो सारा संसार न सिर्फ एक तरफ हो गया, बल्कि अपने भी पराये बनकर परीक्षाओं को समस्या बनाकर सामना करने के लिए खड़े हो गये। समाज या समाज के मनुष्यों की क्या बात करें, स्वयं का शरीर भी चुनौती दे रहा था, पर बाबा ने एक संकल्प भी निगेटिव नहीं चलने दिया। दादियों को ही देखें, जिन्होंने बचपन क्या राजसी ठाठ में बिताया, और भगवान का बनते ही वही परिवार एवं सगे सम्बन्धी दुर्व्यवहार करने लगे। पर कोमल मन पर एक भी कमज़ोरी व निराशा का संकल्प नहीं ला पाये, और जब संसार के कर्मक्षेत्र पर निकलीं तो संसार में धर्मावलम्बियों ने हर हथकंडे अपनाये, पर जिस नारी को अबला समझ वे ठग कर मूर्ख बनाने चले थे, उन्हीं शिव-शक्तियों की दृढ़ता एवं निश्चय के आगे हार खाते रहे। राजकुमारों की तरह जीवन जीने वालों को जब ढ़ोढ़ा(बाजरे की रोटी)और छाछ से पेट भरना पड़ा, तब भी वे उसी मौलाई मस्ती की खुमारी में रह 36 प्रकार के व्यंजनों के समान ही खुशी में मस्त रहे। यज्ञ की बेगरी लाइफ में भी जीवन जीने का आनंद लेते रहे, स्वप्न में भी चुनौतियों से भागने का संकल्प नहीं आया। जब आपने भी इस पथ को अपना ही लिया है, बी.के. बन ही गये, तो अब बार-बार पीछे मुड़कर क्या देखना! संसार के साधन-सुविधाओं का क्या आकर्षण! धन और पद के बारे में क्या सोचना! अब चाहे लौकिक हो या अलौकिक, चाहे प्रकृति हो या स्वभाव संस्कार, चाहे बीमारी हो या परिस्थिति, चाहे भौतिकता हो या आधुनिकता, चाहे कोई भी समस्याओं रूपी मूसल आये, पर हमें डरकर पथ भ्रमित नहीं होना है। हम वो नहीं जो साँचे में ढ़ल गये, हम वो हैं जो साँचे बदल गये। हम उस संस्कृति के रहवासी हैं जहाँ कहावत है कि प्राण जाये पर वचन न जाये। जैसे राजा हरीशचन्द्र का उदाहरण हमने सुना है कि उसने स्वप्न में कह दिया तो कह दिया, फिर जीवन में कितनी भी विषम परिस्थितियाँ आयीं, पर पीछे मुड़कर नहीं देखा और अंत में विजय उसी की होती है। उसी दृढ़ता एवं निर्भयता के कारण आज सत्य हरीशचन्द्र के नाम का पर्याय बना।

सड़क कहीं नहीं जाती है, पर कितने सारे लोग उस पर चलकर अपनी मंज़िल पर पहुँचते हैं। हम जो निर्माण कर रहे हैं, उससे कितनों का पथ सरल हो जायेगा। हमें पता है, जब दुश्मन मरने पर होता है तब वह अपने हर फन का प्रयोग करता है। इसी प्रकार हम रावण राज्य में राम राज्य का निर्माण कर रहे हैं, तो रावण अपने हर शस्त्र का प्रयोग तो करेगा ही, पर हम भी सर्वशक्तिवान, सत्य पिता की संतान हैं। हम अपनी पवित्रता रूपी अनमोल निधि को किसी भी हालत में हिलने नहीं देंगे। परमात्मा ने अपने आश्रय में लेकर, आश्रम में रख हमें ऋषिकुमार बना दिया, अब इस जीवन को अपनी तपस्या की अग्नि से सनत कुमार बनाकर सारे जहान को रावण के चंगुल से मुक्त करायेंगे, स्वतंत्र बनाकर ही छोड़ेंग। ये कार्य अब हमारा लक्ष्य, उद्देश्य, मंज़िल, स्वप्न, जीवन ही हो गया है। इसके लिए हमें कुछ भी सहन करना पड़े, हम खुशी-खुशी तैयार हैं।इस अश्वमेध यज्ञ की रक्षा करने के लिए, चाहे ध्रुव की तरह तपस्या करनी पड़े या मीरा की तरह ज़हर पीना पड़े या सीता की तरह अग्नि परीक्षा देनी पड़े तो भी हम हँसते-हँसते तैयार हैं। कैसी भी परीक्षायें आयें, उसमें पास ही नहीं, बल्कि पास विद् ऑनर होके ही दिखायेंगे। जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसलों से डरना क्या!

ओखली के प्राय: तीन कार्य होते हैं, किसी चीज़ को रिफाइन करना, चमकदार बनाना और महीन करना। ओखली में ऐसे ही मूसल नहीं पड़ते, पर जब कोई वस्तु को इन तीनों में से कोई भी प्रक्रिया से गुज़ारना हो तो ही मूसलों का वार होता है। इसी प्रकार संसार में भी जिसने कुछ धारा से अलग अर्थात् श्रेष्ठ, शुभ या नवीन कार्य करना चाहा, तो परीक्षाओं के हैमर तो लगने ही हैं।
जब किसी धर्म स्थापक ने संसार की पीड़ा को देखकर अपनी अंतस की आवाज़ को सुनकर एक नवीन विचारधारा से जनमानस के ज़ख्मों पर कुछ मरहम लगाने की कोशिश की तो संसार से उन्हें अनेक दर्द व वेदनायें ही मिलीं, लेकिन वे इन बातों को रास्ते की बाधा मानकर रुके नहीं।

ग्वालियर-सिटी सेंटर म.प्र.। कृषि विश्वविद्यालय के कुल सचिव आर.वी. जाटव को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. चेतना।

मधापर-कच्छ(गुज.)। कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज के 'अखिल भारतीय महिला मंडल संस्कार शिविर' में प्रवचन के पश्चात् ब्र.कु. सुशीला को सम्मानित करते हुए महिला मंडल की प्रादेशिक प्रमुख भावना बहन टाँक। साथ हैं ब्र.कु. बीना, ब्र.कु. हेतल तथा अन्य।

जलालपुर-गुज.। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के समापन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हेमलता पटेल,नगर पालिका प्रमुख, के.सी. टिम्बडीया,कृषि विज्ञान केन्द्र के डायरेक्टर, दमयंती पटेल,यू.एस.ए., ब्र.कु. भानू तथा अन्य।

मधापर-कच्छ(गुज.)। कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज के 'अखिल भारतीय महिला मंडल संस्कार शिविर' के उद्‌घाटन पश्चात् उपस्थित हैं समाज के राष्ट्रीय प्रमुख कुंवरजीभाई, उपाध्यक्ष विनोदभाई सोलंकी, महिला मण्डल की प्रमुख ज्योति बहन, प्रादेशिक प्रमुख भावना बहन, ब्र.कु. रक्षा, ब्र.कु. बाबुभाई तथा अन्य।

ग्वालियर-इंदिरागंज। फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया ग्वालियर ब्रांच में 'राजयोग मेडिटेशन-हेल्दी माइंड' कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आदर्श। सभा में डॉ निर्मला शर्मा, डॉ. राकेश कंचन, एसोसिएशन की डायरेक्टर नीलम दीक्षित तथा अन्य।

हुबली-गांधीनगर(कर्नाटक)। सुरेन्द्र निनावे,सी.ए.ओ.,इस्ट-वेस्ट कोस्ट रेलवे,भुवनेश्वर के सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात तथा प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. लता।

खिलचीपुर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस के कार्यक्रम में पूर्व अध्यापक दिलीप सिंह खीची को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम।

सड़क अर्जुनी-शेडारोड(महा.)। 'सुखमय जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दुर्गा, शारदा मंडल की अध्यक्षा प्रमिलाताई कोरे तथा अन्य।

मैनपुर-छ.ग.। पूर्व विधायक डमरूधर पुजारी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका द्वारा हो रही सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् उन्हें पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

कार्य शुरु करने से पहले अपने लिए पाँच मिनट दें

- गतांक से आगे...

प्रश्न: किसी की स्क्रीप्ट लिखना हमारे वश में नहीं है, पर क्या उसे हम करेक्ट कर सकते हैं?

उत्तर: नहीं, करेक्ट वही व्यक्ति कर सकता है जो अभिनय कर रहा हो। एक बार हम थियेटर देख रहे थे। जिसमें एक्टर की एक ही भूमिका थी। उसमें एक ही एक्टर था और वह बहुत सुंदर अभिनय कर रहा था। उसका प्रदर्शन बहुत अच्छा था, उनके बहुत डायलॉग थे जो उनको बोलना था और वो इसे बहुत बार कर चुके थे। अब इस चीज़ में अगर आप देखें तो इस एक्टर को वो डायलॉग मुँहज़बानी याद होगी मतलब कि बिना मेहनत के भी वो बोल सकते हैं। उस दिन क्या हुआ, जैसे ही वो अभिनय कर रहे थे तो इसी बीच में किसी का मोबाइल बज गया और वो एकदम से जड़ हो गया, उसे क्या बोलना था वो भी वह भूल गया, और इस अवस्था में उसको दो मिनट लगा, फिर दो मिनट बाद वह बोला 'सॉरी'। उन्होंने फिर कहा कि मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने मोबाइल को बंद कर दें या फिर साइलेंट कर दें। फिर उसने अपना अभिनय प्रारंभ किया। उसके अभिनय को देखते हुए मुझे ये थॉट आया कि वह एक्टर अपने अभिनय और डायलॉग में इतना खोया हुआ था कि एक छोटी सी डिस्टर्बेंस से वो अपने पार्ट और डायलॉग को भूल गया।

ब्र. कु. शिवानी

हम सारा दिन अपना जीवन कैसे जी रहे हैं! हम तो अपने माइंड को हर तरफ भटकने दे रहे हैं। फिर हमें अपना रोल और डायलॉग कैसे ध्यान में रहने वाला है। माना हम अपने रोल में हैं ही नहीं तो अच्छा प्रदर्शन कैसे करेंगे! लेकिन मैं अपने बजाये औरों के रोल्स और औरों के डायलॉग्स के बारे में सोच रही हूँ। जब मैं अपने रोल में हूँ ही नहीं तो फिर मेरा जीवन कैसा होगा? फिर हम कहते हैं कि सब कुछ करते हुए हमें जीवन में जो सफलता मिलनी चाहिए वो नहीं मिल रही है।

आज एक एक्टर को परफॉरमेंस के बाद क्यों अच्छा लगता है? क्योंकि वो अपने रोल में अच्छी तरह से इन्वॉल्व था। हम किसी भी थियेटर एक्टर से पूछ सकते हैं कि अगर दो घण्टे के अभिनय में वह सिर्फ औरों के पार्ट के बारे में सोचे तो क्या वो अपने अभिनय से खुश हो पायेगा? नहीं। मान लो कि आप एक थियेटर एक्टर हो। एक दिन आप वो अभिनय करके देखो कि आपको कैसा लगता है। मैं समझती हूँ कि आप बीच में ही अटक जाओगे।

प्रश्न:- जैसे ही हम दूसरे को ठीक करने लगते हैं तो सबसे पहले हमारा स्वयं का आत्मविश्वास खत्म हो जाता है। थियेटर में भी हर अभिनय से पहले पांच मिनट का साइलेंस रखते हैं। शो शुरू होने के एक घण्टे पहले वो साइलेंस में चले जाते हैं, फिर उसके बाद वे किसी से भी बात नहीं करते हैं। एक पूरा मेडिटेट करने के बाद पांच मिनट तक स्वयं से बातें करें।

उत्तर:- अगर वो पांच मिनट का साइलेंस रखते हैं तो इसके पीछे उनका क्या उद्देश्य है? यही कि अपने मन और बुद्धि को हर तरफ से मोड़कर अपने रोल के ऊपर एकाग्र कर सके जिससे कि वो अच्छा प्रदर्शन कर सके। क्योंकि उस रोल को सिर्फ और सिर्फ आप ही कर सकते हैं। हम पूरा परफॉरमेंस प्ले कर रहे हैं, विदाऊट प्लेयिंग इन द सीन और तब हमें अपने इस अभिनय में उतना मज़ा नहीं आता है जितना कि आना चाहिए। क्योंकि हम तो अपना रोल 'प्ले' ही नहीं कर रहे हैं।

कहीं न कहीं शायद हमने अपना रोल ही ये बना लिया है कि औरों के रोल के अंदर हमें अपनी बात डालनी है। अब ये जो हम औरों की स्क्रीप्ट सारा दिन लिखने की कोशिश करते हैं तो इसके पीछे कौन-सा बिलीफ सिस्टम होगा?

प्रश्न:- दूसरा व्यक्ति गलत है क्योंकि मैं उससे अच्छा जानता हूँ।

उत्तर:- दूसरे व्यक्ति को मैं कंट्रोल कर सकता हूँ, ये हमारा डीप बिलीफ सिस्टम है।

प्रश्न:- माना मैं इनसे अच्छा करने की कोशिश कर सकता हूँ।

उत्तर:- लेकिन ये तो मेरा बिलीफ है ना कि आप मेरे कंट्रोल में हो, मैं अगर आपको बोलूंगी तो आप करोगे। दिस इज़ वेरी-वेरी डीप बिलीफ सिस्टम कि लोग मेरे वश में हैं। - क्रमशः

स्वास्थ्य

गॉल ब्लैडर स्टोन का सरल इलाज

सिर्फ पाँच मिनट में 21एम.एम. की पथरी को भी गला देगा ये 40 रुपये का घरेलु उपाय।

आयुर्वेद का एक ऐसा चमत्कार जिसे देखकर एलोपैथी डॉक्टर ने दाँतों तले अंगुलियाँ दबा ली। सिर्फ एक नहीं, अनेक मरीजों पर सफलता से आजमाया हुआ है ये प्रयोग। इस प्रयोग को एक डॉक्टर तो पाँच हज़ार से लेकर दस हज़ार में करते हैं। जबकि इस प्रयोग की वास्तविक कीमत सिर्फ तीस-चालीस रुपये की ही है। यह प्रयोग गॉलब्लैडर(पित्ताशय) और किडनी दोनों प्रकार के स्टोन को निकालने में बेहद कारगर है।

इस प्रयोग को हमने जिन पर आज़माया है वो कोई छोटी-मोटी हस्ती नहीं हैं, वह हैं डॉक्टर प्रकाश मिश्रा जी, जो कि महर्षि दयानंद कॉलेज, परेल मुम्बई में मैथ के प्रोफ़ेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं और युनिवर्सिटी सीनेट के सदस्य भी हैं। डॉक्टर साहब के 21एम.एम. का स्टोन आठ साल से गॉल ब्लैडर में था, और इसके कारण उन्हें अत्यन्त दर्द था। डॉक्टर ने इनको गॉल ब्लैडर तुरन्त निकलवाने की सलाह भी दे दी। मगर इन्होंने आयुर्वेद की शरण में जाने का सोचा, और फिर क्या बस पाँच दिनों में स्टोन कहाँ गायब हो गया, पता ही नहीं चला। पाँच दिन बाद जब दोबारा चेक-अप करवाया तो गॉलब्लैडर में स्टोन की जगह केवल थोड़ी रेत जैसी ही दिखी, जिसके बाद डॉक्टर ने उनको थोड़ी दवाई लेने के लिए कहा!! तो क्या है वो प्रयोग आइये जानते हैं?

गॉल ब्लैडर की चमत्कारी दवा

ये कुछ और नहीं है, गुडहल के फूलों का पाउडर अर्थात् इंग्लिश में कहें तो हिबिसकस पाउडर। ये पाउडर बहुत आसानी से पंसारी से मिल जाता है। अगर आप गूगल पर हिबिसकस पाउडर को सर्च करेंगे तो आपको अनेक जगह से पाउडर ऑनलाइन भी मिल जायेगा। जब आप इसे ऑनलाइन मंगवाएँ तो इसको देखिएगा कि ऑर्गेनिक हिबिसकस पाउडर हो, क्योंकि आज बहुत सारी कम्पनियाँ ऑर्गेनिक ला रही हैं, तो वो बेस्ट रहेगा। कुल मिलाकर बतायें तो इसकी उपलब्धता बिल्कुल आसान है।

कैसे करना है इस पाउडर का इस्तेमाल ?

गुडहल का पाउडर एक चम्मच रात को सोते समय खाना खाने के कम से कम एक डेढ़ घंटे बाद गर्म पानी के साथ खा लीजिये। ये थोड़ा कड़वा होता है इसलिए मन भी कठोर कर के रखें। मगर ये इतना भी कड़वा नहीं होता कि आप इसको खा न सकें। इसको खाना बिल्कुल आसान है। इसके बाद कुछ भी खाना-पीना नहीं है। डॉक्टर मिश्रा जी के अनुसार, क्योंकि उनके स्टोन का साइज़ बहुत बड़ा था, तो उनको पहले दो दिन रात को ये पाउडर लेने के बाद सीने में अचानक बड़ा तेज़ दर्द हुआ, उनको ऐसा लगा मानो हार्ट-अटैक आ जायेगा। मगर वो दर्द था उनके स्टोन के टूटने का, जो दो दिन बाद नहीं हुआ, और पाँच दिन के बाद कहीं गायब हो गया था और पीछे रह गयी थी उसकी यादें रेत बनकर, जिनका सफाई अभियान अभी चल रहा है। इसके साथ में उनको प्रोस्टेट इनलार्जमेन्ट की समस्या भी थी, वो भी सही हो गयी। इसके बाद यही प्रयोग उन्होंने एक दूधवाले और एक और आदमी पर भी किया, जिनका स्टोन 8 एम.एम. और 10 एम.एम. का था, उनका यही प्रयोग बिना किसी दर्द के बिल्कुल सही हुआ। अर्थात् अगर स्टोन का साइज़ बड़ा है तो वो दर्द कर सकता है।

इस प्रयोग में थोड़ी सावधानी

पालक, टमाटर, चुकन्दर, भिंडी का सेवन न करें। अगर आपका स्टोन बड़ा है तो ये टूटने समय दर्द भी कर सकता है। पाठक-गण अपने विवेक से इस प्रयोग को करें वो भी किसी चिकित्सक की उपस्थिति में।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आज हमारे पास चार तरह के कॉन्शियसनेस हैं। या तो हम मनी माइंडेड हैं, मटीरियल माइंडेड हैं, मशीनरी माइंडेड हैं या फिर मैन माइंडेड हैं। ये चारों कॉन्शियसनेस को चलाने के लिए एक और कॉन्शियसनेस की ज़रूरत है, जिसको हम कहते हैं माइंड, और माइंड को चलाने के लिए हमारे पास एक अद्भुत शक्ति है, जिसे हम कहते हैं मेडिटेशन।

आज प्रत्येक मनुष्य उपरोक्त कॉन्शियसनेस के आधार से कर्म करता है। यही चेतना उसके अंदर निरंतर चलती रहती है। वो बात भी करेगा, तो भी भौतिकता को लेकर, या मटीरियलिस्टिक वर्ल्ड की। जिसमें पैसा, घर, गाड़ी आदि शामिल हैं। अब मन की जो शक्ति है, उस शक्ति का उपयोग इन सारी चीज़ों को प्राप्त करने में यदि आप करते हैं, तो ये कोई बड़ी बात नहीं है। बात है हमारी सारी ऊर्जा का उपयोग ऐसी चीज़ों को प्राप्त करने में होता है जो हम चाहें तो बिना प्रयास के हमारे पास आ सकती हैं। आप देखो, पूरे जीवन हम सभी ऑब्जेक्ट्स को इकट्ठा करने में लगा देते हैं, और बाद में खुद ऑब्जेक्ट बनकर सम्भालते हैं। जैसे आपने घर, गाड़ी खरीदा, खूब बैंक बैलेंस बनाया, डिपॉज़िट किया, तो बाद में उसको सम्भालने में ही आपकी बुद्धि यूज़ होती है। तो आप क्या हो गये, एक मशीन बन गये। है ना ऐसा! अब देखो, सारी चीज़ों के साथ हमारा

मोह इतना ज़बरदस्त है, जिसके कारण हमारा मन अपनी शक्तियों को इनसे बाहर प्रयोग करने में असक्षम है। ज़्यादातर लोग अपना जीवन पैसा कमाने के पीछे ही गँवा रहे हैं। यानि मनी ने सबको और चीज़ों से मौन कर दिया है। अगर कहीं किसी के पास जाते हैं, तो कैसे प्रोग्रेस हो, कैसे सैलरी मिले, कैसे अधिक से अधिक हम पैसा कमायें, बस यही। आप देखो, कोई भी तपस्वी है, कोई ऋषि है, कोई महान आत्मा है, वो अपने मन को कुछ कल्याणकारी, हितकर कार्यों को करने में लगा रहे हैं। उनका मन भौतिकवादी बातों से इतना फ्री है कि वो कुछ भी करें, कैसे भी करें, वो कहीं बंधे हुए नहीं हैं। क्योंकि जीवन का मूल्य उन्हें पता है। जीवन कमाने, खाने और गंवाने के लिए नहीं है, समाज के लिए कुछ अच्छा कार्य करने के लिए मिला है।

एक शब्द में अगर हम कहें तो कह सकते हैं कि हम सब मेरा धन, मेरा घर, मेरा परिवार तथा मेरे में इतनी अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हैं कि सारी शक्ति अपने आप में सिमट कर रह गयी। आकर्षण का सिद्धान्त कहता है कि आप जिस चीज़ के पीछे भागेंगे, वो चीज़ आपको और ज़्यादा अपनी तरफ भगायेगी। अर्थात् दिन-रात इन्हीं बातों में हमारा ध्यान होगा तो वही चीज़ें आकर्षित होकर हमारे पास आएंगी और हमें परेशान भी करेंगी। मन जितना शांत होकर प्रकृति के बाह्य आकर्षणों से ऊपर उठकर जो संकल्प करता है, जो सोचता है, बोलता है, उस व्यक्ति का मन ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के साथ जुड़ जाता है। वो जो कहेगा, प्रकृति, दुनिया, लोग अपने आप उसके लिए इंतज़ाम करेंगे। लेकिन उसके लिए इन आकर्षणों से अपने आपको निकालना पड़ेगा।

आपको ज़्यादा अपने मन को उलझाना नहीं है उन बातों में जिनसे आपका कोई लेना-देना ना हो। हमारी आजीविका के लिए ये सारी चीज़ें अपने आप उपलब्ध हो जाएंगी। मन जितना सूक्ष्म होगा, जितना सहज होगा, जितना सरल होगा, जितना उसके अंदर विचार या संकल्प कम होंगे, उतना उन सारी चीज़ों को अपनी तरफ ज़्यादा आकर्षित करेगा, जो स्थायी और सार्वभौमिक होगा। सार्वभौमिक चीज़ें पूरे विश्व को अपने आप ही मिल जाती हैं, उन्हें देना नहीं पड़ता।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-10-2016

1	2		3	■	4		5	6	■
7		■	8	9		■	10		■
	■	■	■	11		■	12		■
	■	■	13			■	■	■	14
■	15			■	■	■	16		
17		■	■	18		■		■	
	■	19			■	20			■
21			■	22	23	■		■	24
■	■	■	25			■	■	26	
■	27			■	28			■	

ऊपर से नीचे

1. भीषण मारकाट, भयानक युद्ध (4)
2. यथेष्ट, केवल, सिर्फ, खत्म (2)
3. गर्व, नखरा, लाड-प्यार से पला (2)
4. लुभावना, मोहक, कशिश (4)
5. जानलेवा प्रहार, हिंसक, कष्ट देने वाला (3)
6. बुलावा, खोज, प्राप्त करने की इच्छा (3)
9. कृत्रिम जल मार्ग, पानी ले जाने का नाला (3)
13. इस्लाम धर्म की मुख्य पवित्र यात्रा (2)
14. ....तुम्हारी ओ प्यारे भगवन, क्षणिक दर्शन (3)
15. .... रूप की बीमारी से बच के रहना है (2)
16. मिट्टी का तेल, केरोसिन (4)
17. परिणाम, फल, परीक्षा फल (3)
18. ऐसा समूह जहाँ आध्यात्मिक बातें हों (4)
19. अधिक, बहुत, सीमा के पार (2)
23. तपा हुआ, उष्णता, उत्तेजक (3)
24. काल, वक्त, अवसर (3)
25. धन-सम्पत्ति, प्रयोजन, अभिप्राय (2)

बायें से दायें

1. अधीर होना, व्याकुल होना (4)
4. .... महापाप, आत्महत्या (4)
7. महीना (2)
8. पिता, सिया के पिता (3)
10. निचला हिस्सा, आधार (2)
11. खुशी, आनंद (2)
12. किस समय, कभी नहीं (2)
13. अपहरण, चोरी (3)
15. जो राज़ को नहीं जानता है वही....होता है, ना खुश (3)
16. ज़ख्मी, चोटिल (3)
17. गीला, आर्द्र, भीगा हुआ (2)
18. जो सौतेला न हो, मातेला (2)
19. भूतकाल, जो बीत चुका हो (3)
20. हृदय, दिल, हिम्मत (3)
21. जागरण, सजग होना (3)
22. ....तारे कुसंग बोरे (2)
25. यदि, यद्यपि (3)
26. बराबर, एक जैसा, सदृश (2)
27. शक्तिशाली, योग्य, उपयुक्त (3)
28. बारीक, अति पतला (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

वर्ग पहेली-3-2016 का उत्तर

ऊपर से नीचे	बायें से दायें
1. अधर	1. अक
2. कर्म	3. सतयुग
3. समझ	5. स्वधर्म
4. तला	6. कमला
5. स्वचिंतन	8. चिर
6. कल	9. सुलझ
7. परकाया	10. प्रकार
9. सुत	11. राजा
10. प्रजा	12. नमक
13. महफिल	15. दुआ
14. कदर	17. साया
16. आखरीन	18. हद
20. लाख	19. खलास
21. काबिल	21. काफिर
22. ताजधारी	22. तारीख
23. सहयोग	23. सम
24. मन	25. बिल
28. राज़	26. साजन
	27. सहन
	29. मजबूरी
	30. सुजाग

वर्ग पहेली-4-2016 का उत्तर

ऊपर से नीचे	बायें से दायें
2. फरिश्ता	1. नफरत
4. मद	3. प्रेम
5. साधक	5. सावधान
6. धारणा	8. रिश्ता
7. नस	9. रसद
8. रिवाज़	11. चालाक
10. दशानन	12. शान
11. चाकर	14. जनक
13. नरक	17. नर
15. नवीन	18. वीर
16. गटर	19. घाट
19. घातक	20. कनक
21. कामदेव	21. कान
23. सनातन	22. तरस
24. मनन	24. मज़ाक
26. लानत	25. नालायक
27. कमल	28. जतन
	29. वतन
	30. नत

नामली-म.प्र.। चतुर्मास के अवसर पर संत जयंत सेन जी महाराज को ईश्वरीय संदेश एवं सौगात देने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. स्वाती, पार्षद श्रीनाथ योगी तथा अन्य।

नांदेड़-कैलाशनगर(महा.)। 'तनावमुक्त जीवन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. प्रभा मिश्रा, महापौर शैलजा स्वामी, श्रीमति राजश्रीताई पाटिल,अध्यक्ष,गोदावरी मल्टी स्टेट बैंक, केशव घोंशे पाटिल,संपादक,गोदातीर समाचार, भरत जेठवानी, बालासाहेब कल्याणकार,नगरसेवक, ब्र.कु. शिवकन्या तथा अन्य।

नरसामपेट-तेलंगाना। 'इगनाइट द यूथ फॉर ग्लोरियस इंडिया' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डी. मुरलीधर गरू,डी.एस.पी., सृजना रेड्डी गरू,कॉरसपॉन्डेंट सिद्धार्थ कॉलेजेज़, ब्र.कु. श्रीलता तथा ब्र.कु. कल्पना।

नवी मुम्बई। रोटरी क्लब 'गरिमा' द्वारा श्रीनाथ हाई स्कूल तथा जूनियर कॉलेज में 'हेल्दी माइंड' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. शीला,वाशी, ब्र.कु. शुभांगी,सानपाडा, कॉलेज की प्रिन्सीपल अंशु शर्मा तथा अन्य।

नवसारी-गुज.। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ अभियान' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए के.सी. टिम्बडीया,डायरेक्टर,कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रीति ठक्कर,डिप्युटी डी.डी.ओ., ब्र.कु. नलिनी,मुम्बई, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. विष्णु, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. भानु तथा अन्य।

खिलचीपुर-म.प्र.। उरी, शहीद जवानों को श्रद्धांजली देने के पश्चात् परमात्म स्मृति में खादी ग्रामोद्योग पति रघुनंदन शर्मा, विधायक हज़ारी लाल दांगी, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. सीमा तथा अन्य।

रायपुर-छ.ग.। राज्यपाल बलराम दास टण्डन को मुलाकात के दौरान गुलदस्ता भेंट करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला तथा ब्र.कु. सविता।

अहमदनगर-महा.। त्रिपुरारी पोर्णिमा के अवसर पर 5559 दीप जलाकर शिव परमात्मा के ज्योति स्वरूप को प्रकाशित किया गया। इसको लंडन के वंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया। वर्ल्ड रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट पतंजली आयुर्वेद के केन्द्रीय प्रभारी डॉ. जयदीप आर्य से लेते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।

मुम्बई-बोरीवली वेस्ट। प्रबोधनकार ठाकरे हॉल में 'कॉम इन क्राइसिस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अजिंक्या रहाणे,इंटरनेशनल क्रिकेटर, डॉ. शैलेष श्रीखांडे,प्रसिद्ध ऑन्कोलॉजिस्ट, शशिकिरण शेट्टी,फाउण्डर एंड चेयरमैन ऑफ ऑल कारगो लॉजिस्टिक्स, ब्र.कु. दिव्यप्रभा, ब्र.कु. श्रेया तथा अन्य।

गोवा। 'नारी दिव्यत्व दर्शन अभियान' के अंतर्गत आयोजित रैली का शुभारंभ करते हुए ग्लेन तिकलो,मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेम्बली ऑफ गोवा। साथ है दर्शना करापुरकर,प्रेसीडेंट,लोकल यूनिट ऑफ नारी शक्ति केन्द्र, ब्र.कु. शोभा तथा अन्य।

नवसारी-गुज.। शतायु सम्मान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मंगू पटेल,विधायक,गणदेवी तालुका, पियुष देसाई,विधायक,नवसारी, ब्र.कु. नलिनी,मुम्बई, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. गोविंद,पूर्व डायरेक्टर,जी.ई.बी. तथा अन्य।

इटारसी-म.प्र.। पार्षद नंदा सोनकर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता।

तपस्या के पथ पर...

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,मा.आबू

साधना पथ धूप और छाँव की मिचोलियों का खेल है। साधना पथ पर चलते-चलते कई बार उतार-चढ़ाव दिखाई पड़ते हैं। कई बार ऐसा निश्चय हो जाने पर भी जीवन यात्रा में माया की आंधी उसे बेहोश कर देती है। जब बेहोशी से जागते हैं तो महसूस होता है, अरे, कहाँ गड्ढे में गिर गये, जो मेरा लक्ष्य ही नहीं। होश में आने पर समय बीत जाने का पश्चाताप उन्हें घेर लेता है और सोचने को बाध्य कर देता है। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए लक्ष्य केन्द्रित तपस्या की आवश्यकता है। अगर हम उस पर कामयाब हो जाते हैं तो मन इच्छित फल प्राप्त करने से हमें कोई रोक नहीं सकता। तपस्या की धारा को कैसे तीक्ष्ण करें उस पर चिन्तन-मनन करना ज़रूरी है, तब ही साधना पथ पर निखार आयेगा।

ज्ञान मार्ग में आने पर हम सबने हमारा लक्ष्य समझ लिया। यह भी भगवान के महावाक्य कानों में सुनाई देते रहे कि, भगवान और उसका जो कुछ है वह हमारा है। दूसरे शब्दों में कहें तो बाबा मेरा, मैं बाबा का। बस इस महावाक्य पर अडोल रहना ही जीवन यात्रा की सच्ची तपस्या है। तपस्या मास में हम सभी कुछ ऐसे बिन्दु पर नज़र डालें जिससे हमें अपनी संतुष्टता हो कि हम अवश्य इन्हें धारण कर लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे।

बाबा अपना नज़र आये

जैसे ही हमने यह सुना कि बाबा हमारा है। यह महावाक्य हमारे जीवन के साथ कितना जुड़ जाता है और अंत:करण की गहराइयों से अभिभूत होता है। जिससे हम बाबा के बहुत नज़दीक हैं ऐसी महसूसता होती है। भगवान हमारा है, हम उनके बहुत करीब हैं। जो भक्ति में दूरी बनी हुई थी, जो शास्त्र पढ़ने से महसूस होता था, वह अंतर कितना मिटा है। बाबा ने महावाक्य कहे कि मैं तुम्हारी मदद के लिए सदा साथ हूँ। ऐसा अनुभव इस जीवन यात्रा में बना रहे। केवल मदद मांगते न रहें भक्तों की

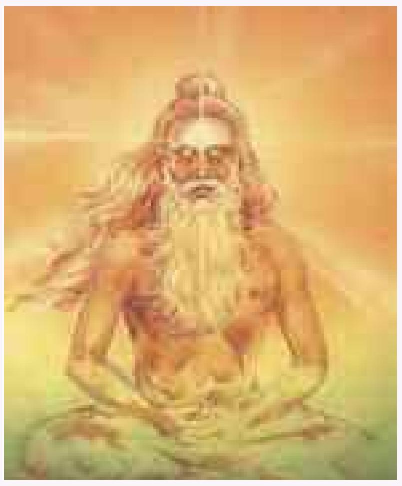

तरह। लेकिन हम मदद के पात्र बन जाएं। परन्तु प्रश्न यह है कि वह कैसे करें और क्या करें जो बाबा हमें अपना नज़र आये? उसके लिए आवश्यकता है बाबा की आज्ञाओं का सम्पूर्ण रूप से पालन करने की। तब तो हम भी समीप नज़र आएंगे। तब उसे भी लगेगा कि हम उसके हैं। तब किसी परिस्थिति और विघ्न में पहले हम औरों को याद नहीं करेंगे, जो हमारी पुरानी आदत पड़ी हुई है। समस्या आई तो हमारा मन-बुद्धि औरों की तरफ चला जाता है, कभी किसी का सहारा ढूंढते तो कभी किसी का। लेकिन जब परमात्मा से अपनापन है, उसमें विश्वास रहेगा कि वो हमारा अपना है तो सभी बातें सरल हो जाएंगी। उसको छोड़कर कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। लेकिन अभी तक ऐसा होता है कि उसे छोड़कर इधर-उधर देखते हैं मदद के लिए। अब तक हमें अनुभव ही नहीं कि वह सर्वशक्तिवान है। इस अनुभूति की ओर हम बढ़ते चलें। यही हमारी तपस्या का प्रैक्टिकल सबूत हो जायेगा। इस बात पर चिन्तन करें कि क्या परमात्मा और हम समीप आ रहे हैं।

भगवान के समीप लाने वाली बातें

कौन सी ऐसी बातें हैं जिससे बाबा से हमारी दूरी बढ़ जाती है और कौन सी बातें हमें बाबा के समीप लाती हैं, इस पर विचार करने की ज़रूरत है।।

भगवान ने वरदान देने का वायदा किया था, उसमें हमने कुछ नहीं किया।

हमारा काम बहुत बढ़ रहा हो और दोनों के संघर्ष में हमारा मन चिड़चिड़ा होता जा रहा हो, ऐसा भी हो सकता है। हमारा लक्ष्य है कर्मयोगी बनने का। कर्म-योग का बैलेंस रखना। पूरा ब्राह्मण जीवन कर्मयोगी जीवन है। अगर कर्म और योग अलग-अलग हो जाता है तो दोनों का रस नहीं मिलता। बैठकर योग करेंगे तब मन अधीन कर लेगा। अपनी इच्छा अनुसार कर्म को चलाते हैं। तो दोनों को साथ-साथ करना, ये जीवन को सरल बनाता है। तपस्या हमें - शेष पेज 11 पर

आखिर किस बात का अहंकार है हमें ?

- ब्र.कु. निकुंज,मुम्बई

हमें बचपन से ही यह सिखाया जाता हैं कि 'मैं-मैं' की बकरी नहीं बनना क्योंकि जो भी अहंकार के इस मैं मैं मैं फँसते हैं, उनका जीवन अंतत: नरक समान बन ही जाता है। आखिर क्या है ये अहंकार, जो नुकसानदायक होते हुए भी हम उसे छोड़ने को तैयार नहीं होते?

गीता के तीसरे अध्याय में कहा गया है, हमारे सभी कर्म वास्तव में प्रकृति के गुणों द्वारा किये जाते हैं, किन्तु जो अज्ञानी होते हैं व जिनका अन्त:करण अहंकार से मोहित है, वे समझते हैं कि कर्म उन्होंने ही किया, अर्थात 'मैं करता हूँ' यह अहंकार रख कर वे स्वयं को अनेक प्रकार के बंधनों में बांध लेते हैं, इसलिए ही हमें बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि 'मैं-मैं' की बकरी नहीं बनना क्योंकि जो भी अहंकार के इस मैं-मैं में फँसते हैं, उनका जीवन अंतत: नरक समान बन जी जाता है। आखिर क्या है ये अहंकार, जो नुकसानदायक होते हुए भी हम उसे छोड़ने को तैयार नहीं होते?

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार सी.एस. लुईस ने लिखा है कि 'अहंकार की तृप्ति किसी चीज़ को पाने से नहीं अपितु उस चीज़ को किसी दूसरे की अपेक्षा ज़्यादा पाने से होती है 'वस्तुत: अहंकार का अर्थ ही अपने को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने का दावा है, इसी वजह से लोग लोभ करते हैं ताकि वे दूसरों से संपन्न दिखें, दूसरों को दबाने की चेष्टा करते हैं ताकि अपनी प्रभुता सिद्ध कर सकें और दूसरों को मूर्ख बनाना चाहते हैं ताकि स्वयं बुद्धिमान सिद्ध हो सकें। याद रखें, अहंकार सदैव दूसरों को मापदंड बना कर चलता है। दूसरों से तुलना कर अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने की वृत्ति का नाम ही अहंकार है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि कैसे महान सभ्यताओं, शक्तिशाली राजवंशों और सम्राज्यों ने अहंकारी, अभिमानी और घमंडी शासकों के हाथों में गिरकर अपने मूल अस्तित्व को ही मिटा दिया, अतीत के राजा, महाराजाओं और वर्तमान के शासकों के घमंडी स्वभाव की वजह से ही यह कहावत बनाई गई है कि 'सत्ता भ्रष्ट करती है और पूर्ण सत्ता बिल्कुल ही भ्रष्ट करती है'।

पुराणों में उल्लेख आता है कि देवता असुरों से जब जब भी पराजित हुए तो उसका कारण रहा उनका असंगठित होना, क्योंकि प्रत्येक देवता को अपनी शक्ति का अहंकार रहा और इसीलिए वे आपस में तालमेल बिठा नहीं सके। कहने का भाव यह है कि किसी व्यक्ति में सारे सद्गुण होते हुए भी यदि उसके भीतर अहंकार विद्यमान है तो वह उसके सद्गुणों की शक्ति को उसी प्रकार आवृत्त कर लेगा, जिस प्रकार आंख में पड़ा हुआ तिनका सारी दृष्टि को ढ़क लेता है। महाभारत में इस प्रकार के कई प्रसंग आते हैं, जब भगवान ने अर्जुन के अभिमान का मर्दन किया और उसे भगवत प्राप्ति में सबसे बड़ा अवरोध बताया। इसी प्रकार रामायण में भी नारद के अभिमान का प्रसंग आता है और वे अनुभव करते हैं कि उनके मिथ्या अभिमान के कारण वे भगवान से कितने विमुख होते जा रहे हैं।

अहंकारी व्यक्ति सदा अपने आप को दूसरों की भेंट में अधिक महत्वपूर्ण मानता है और अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए वो अन्य से टक्कर लेने के लिए सदैव तत्पर रहता है। किन्तु ऐसा करने में वह ये भूल जाता है कि महत्वपूर्ण होना एक अलग बात है और स्वयं को महत्वपूर्ण मानना तथा उसे सिद्ध करना सर्वथा दूसरी बात है। हमें इस हकीकत को भूलना नहीं चाहिए कि संसार में सबसे महत्वपूर्ण यदि कोई है तो वह सर्वशक्तिमान परमात्मा है और उस सर्वोच्च सत्ता की ऐसी कोई चेष्टा दिखाई नहीं देती जो वह अपने आपको महत्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए करता हो।

परमात्मा को अपनी सत्ता का अहंकार नहीं

अब जो समस्त संसार के स्वामी हैं, वे परमपिता परमात्मा अपनी सत्ता का अहंकार नहीं रखते हैं, तो क्या कारण है कि हम जैसे अरबों व्यक्तियों के होते हुए हम अपने आपको सबसे महत्वपूर्ण मानें और दूसरों से टक्कर लेते फिरें। इसलिए, बेहतर होगा कि हम अहंकार रूपी इस बीमारी को परमात्म कृपा का टीका लगाकर सदा के लिए मुक्ति प्राप्त करें, अन्यथा यह ऐसी खतरनाक बीमारी है जो हमारे जीवन को संपूर्णत: उजाड़ सकती है।

भुज-गुज.। कड़वा पटेल कन्या छात्रावास की छात्राओं के लिए 'हाऊ टू अचीव गोल' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. गंगाधर, संपादक,ओमशान्ति मीडिया पत्रिका,मा.आबू, एयरफोर्स ऑफिसर अमृत पटेल, ब्र.कु. रक्षा, मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. अनुज,दिल्ली, कॉलेज के प्रोफेसर तथा ब्र.कु. बीना।

खाता कहीं खटाई में तो नहीं...!

ब्र.कु. स्नेहा मुम्बई

गीता में कहा गया है, क्या लेकर आए थे, क्या लेकर जाना है। जो आज तुम्हारा है वो कल किसी और का था और आने वाले कल में किसी और का होगा। जिसे तुम अपना समझ रहे हो, बस यही प्रसन्नता ही तुम्हारे दु:खों का कारण है। ये बातें सौ फीसदी सही हैं, क्योंकि हमारा कर्मों का खाता पैसे के खाते से बिल्कुल अलग है, लेकिन कर्म करने में या करवाने में ये सारे सहयोगी हैं। हम बहुत कुछ भूल चुके हैं और भूल रहे हैं। उन भूलों को हम कैसे सुधार सकते हैं, कोई तो इसका इलाज ढूंढ़ते हैं।

जब किसी देश की सरकार किसी खाताधारक को खाता खुलवाने के लिए कहती है तो उसके लिए कई सारी औपचारिकताएँ पूरी करनी पड़ती हैं। जिसमें पहचान पत्र, परिचय पत्र तथा घर का पूरा पता चाहिए। जिसके आधार से खाता धारक की पूरी जानकारी सरकार के पास चली जाए। हम बैंक में खाता इसलिए नहीं खोलते हैं कि हमारा पैसा एक जगह रखा जाए तथा सुरक्षित रहे, बल्कि इसलिए खोलते हैं कि हमारे पास जो राशी है वो राशी देश हित में भी काम आए, सरकार की उसपर नज़र भी रहे और हम साफ-सुथरे भी रहें। आज लोग पैसा घर में रखते हैं, बैंक में नहीं रखते, कि सरकार तथा इनकम टैक्स पूछेगा कि इतना पैसा कहाँ से आया। तो इसका मतलब तो यही हुआ ना कि ये पैसा सफेद नहीं है, लेकिन कुछ गलत तरीके से आया है। यही स्थिति हमारे कर्मों की भी है।

अब आप सोचो कि यहाँ तो पहचान पत्र, परिचय पत्र, पासपोर्ट, वीज़ा आदि से खाता खुलवा सकते हैं, और खाते में पैसा जमा करवा सकते हैं और निकाल सकते हैं। लेकिन कर्मों के खाते के लिए किसी तरह का पहचान पत्र, परिचय पत्र, पासपोर्ट और वीज़ा काम नहीं आता। वहाँ पर कोई भी प्रति दिखाने से हमको माफी नहीं मिलती। **आज हम दुनिया में झूठ बोलकर, इधर-उधर की बातें करके सबकी वाहवाही लेते हैं। लेकिन परमात्मा की अदालत में तो हमारे कर्म ही हमारी असली गवाही देते हैं।** आप सोचिए ज़रा! जब भी हम कोई ऐसा कर्म करते हैं, जिस कर्म के पीछे हमारा उद्देश्य बुरे भाव वाला है, तो वो हमारे खाते में जाकर जमा होता जाता है। आज पूरे विश्व की यही स्थिति है।

लोग अपने परिवार, अपने रिश्तेदार, अपनेपन के कारण अपने कर्मों के खाते को बिगाड़ते जा रहे हैं। कहते हैं कि परिवार चलाना है, बच्चों को पढ़ाना है, कुछ भी ऐसा करना है तो हमें झूठ तो बोलना पड़ता है ना। लेकिन आप सोचो ज़रा, जो आपने झूठ बोला, कपट किया, काला बाज़ारी की, तो उसको करते समय भी तो आपके मन में संकल्प आया होगा कि ये गलत है। ये गलती जितनी बार हम करते हैं, उतने दु:खी होते हैं। इसपर किसी शायर ने कहा भी है कि,

ज़िन्दगी मिली थी किसी के काम आने के लिए, लेकिन वक्त सारा बीत रहा है कागज़ के टुकड़े कमाने के लिए।

अरे, क्या करोगे इतना पैसा कमा कर, क्योंकि ना तो कफन में जेब है और ना ही कब्र में आलमिरा, और ये मौत के फरिश्ते तो रिश्वत भी नहीं लेते।।

आप कल्पना करिये कि अगर सरकार सारे नोटों का चलन बंद कर दे, और कह दे कि कोई भी पहचान पत्र दिखाने से आपको कुछ नहीं मिलेगा, तो उस समय आपकी स्थिति क्या होगी! अफरा-तफरी मच जायेगी, सोचेंगे क्या करें, कैसे करें, कैसे चलायें! ये स्थिति आने वाले समय में उत्पन्न होने ही वाली है। यदि उस समय आपने समझदारी से अपने पुण्य का खाता जमा किया होगा, दूसरों का भला सोचा होगा, हितकर सोचा होगा, कुछ कल्याणकारी सोचा होगा, तो वो किया गया पुण्य आपको अपनी जीविका चलाने के लिए कहीं न कहीं से इंतज़ाम ज़रूर कर देगा। यह हमारा अनुभव भी कहता है। यह अनुभव यह है कि हमलोग परमात्मा के समर्पित बच्चे हैं। परमात्मा ने हम सबसे वायदा किया है कि बच्चे, तुम किसी परिस्थिति, लोभ वश, मोह वश, अहंकार वश, काम विकार वश कोई ऐसा कर्म नहीं करो जिससे तुम्हारा खाता खराब हो। अगर तुम मेरे बारे में सोचो, मेरे लिए कर्म करो तो तुम्हारे लिए खाने का इंतज़ाम मैं करूंगा। सत्यता के साथ रहो, सत्यता के साथ जियो। अगर तुम इसपर चलते हो, तो कोई भी बड़े पहाड़ जैसी परिस्थिति भी तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकती। लेकिन आज हमारी बुद्धि इतनी ज़्यादा विकारों के वशीभूत है कि हम गलत काम कर ही जाते हैं। इसीलिए तो खाते को सुधारने के लिए हमें परमात्मा के साथ जुड़ने की आवश्यकता है। अति अति अति आवश्यकता है।

हम सभी अष्ट सिद्धि और नौ निधियों के दाता हैं। नौ निधि अर्थात्, नौ सम्पत्ति, जिसमें समय, संकल्प, शक्ति, श्रेष्ठ कर्म, दुआयें, खुशी, पवित्रता, श्वास आदि आदि खज़ानें शामिल हैं। इन खज़ानों को हम आज कहाँ प्रयोग कर रहे हैं, इन विनाशी धन, इन विनाशी नाम मान शान के पीछे। इससे कितने विकर्म, पापकर्म का धन हमारे खाते में जमा हो रहा है, ये आप सोच भी नहीं सकते। हमें लगता है कि पैसा कमाने से, घर खरीदने से, बैंक बैलेंस बनाने से खुशी, शांति, पवित्रता आ जाएगी, लेकिन आज तक न ऐसा हुआ है और ना होगा। ये आएगी तो एक आधार से, और वो है श्रेष्ठ कर्म। क्योंकि श्रेष्ठ कर्म हमारे पुण्य के खाते को बढ़ाने का बहुत अच्छा ज़रिया है। तो डरो पापकर्म से, ताकि आने वाले समय में आपके पुण्य का खाता देखकर परमात्मा भी खुश हो जाये।

पोरबंदर-गुज.। राष्ट्रीय नेवी में 'की टू सक्केस' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनुज, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. रमेश तथा ब्र.कु. बहनों के साथ नेवी ऑफिसर्स।

अनुभव: आत्मिक संयम के लिए अपनायें प्राकृतिक नियम

- ब्र.कु. मानिक,नागपुर(महा.)

मुझे यह ज्ञान 1981 में प्राप्त हुआ। इससे पहले मैं भक्ति बहुत करता था। निर्जला उपवास भी करता था, लेकिन ना किसी देवी-देवता का दर्शन हुआ और ना ही कोई साक्षात्कार। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के पश्चात् हमें यह ज्ञान बहुत अच्छा लगा। ब्रह्माकुमारियाँ साक्षात देवी-देवियाँ दिखने लगीं लेकिन अनुभूति कुछ भी नहीं हुई। मैं साइंस एवं जीवशास्त्र का विद्यार्थी था, इसलिए यहाँ का ब्रह्मचर्य, पवित्रता, खान-पान की शुद्धता ने मुझे थोड़ा सा इस ज्ञान से विमुख करने का कार्य किया, क्योंकि मैं इसे कर नहीं सकता था। मैं नित्य प्रति ज्ञान भी सुनता, लेकिन धारणाएं नहीं होतीं।

एक दिन घर में एक गुड़िया का खिलौना देखा। वह एक बिन्दु टोक पर खड़ी थी, कितना भी गिराओ, फिर भी खड़ी की खड़ी रहती थी। उस समय मेरे दिमाग की बत्ती जली। मैंने भृकुटि के बीच ज्योतिबिन्दु आत्मा में मन को एकाग्र किया और शरीर की सारी ग्रन्थियाँ, नस-नाड़ी को निहारते हुए संतुलन करने लगा। धीरे-धीरे मेरा शरीर हल्का और टेंशन फ्री होने लगा। आत्मा और शरीर का संयोग पानी के घटक (H2O) से याद आया। जिस प्रकार हाइड्रोजन जलता है और ऑक्सीज़न जलने में मदद करता है, दोनों के संयोग से पानी बनता है। ऐसे ही आत्मा स्वयं सुख शांति पवित्रता का स्वरूप है, लेकिन आत्मा को भूलकर देहभान में आने से विकर्म हुए। जिस प्रकार हाइड्रो ऑक्सीज़न फ्लेम की अग्नि से लोहा पिघल सकता है, तो मैं देह-अभिमान को क्यों नहीं छोड़ सकता।

मैंने आत्मचिंतन की गहराई में जाकर मन बुद्धि संस्कार का मिलान ऐटम के एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन से किया और देखा कि एटॉमिक स्ट्रक्चर में एलेक्ट्रॉन्स 2,8,16,32 की संख्या में सर्कल में घूमते हैं। लौकिक पढ़ाई में पिरेडिक टेबल से ज्ञात हुआ कि इलेक्ट्रॉन के घटने-बढ़ने से पदार्थ के गुण बदल जाते हैं। यही विधान आत्मा के मन के संकल्प के साथ है। जब सकारात्मक विचार से शुभ भावना और शुभ कामना की शक्ति बढ़ती है तो आत्मा 16 कला 32 गुण के आत्मिक स्ट्रक्चर के साथ स्मृति स्वरूप में रहकर यूरेनियम और रेडियम की तरह दिव्य प्रकाश चारो ओर फैला सकती है। ऐसा मैंने अनुभव किया। साथ ही मैंने यह भी देखा कि शिव बाबा के सप्तगुण मुझ चैतन्य आत्मा से परावर्तित होकर चारो ओर फैलते हैं। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि शिव बाबा ने स्वर्ग की स्थापना के कार्य में मुझे सहभागी बनाया। मैं इस ज्ञान के 35 साल के सफर में परिवार सहित पवित्र गृहस्थ व्यवहार में रहकर शिवबाबा के कार्य में सेवारत हूँ।

पुणे-पिंपरी। साधू वासवानी मिशन की ओर से मिट्लेस डे के उपलक्ष्य में आयोजित महारैली में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भी सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा की झाँकी के आयोजन में उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारी बहनें।

रायपुर-छ.ग.। सड़क दुर्घना में पीड़ित लोगों की याद में आयोजित विश्व यादगार दिवस कार्यक्रम में मंचासीन हैं देवनाथ सोमकुँवर,अतिरिक्त महानिरीक्षक,नक्सल ऑपरेशन, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, अरुण देव गौतम,सचिव,गृह, जेल एवं परिवहन विभाग, संजय शुक्ला,पुलिस अधीक्षक तथा बलराम हिरवानी,यातायात पुलिस अधीक्षक।

गोवा-मडगांव। केन्द्रीय संरक्षण मंत्री मनोहर पर्रीकर तथा मुख्यमंत्री माननीय लक्ष्मीकांत पार्सेकर को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. शोभा तथा ब्र.कु. सुरेखा।

रतलाम-नज़रबाग कॉलोनी(म.प्र.)। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए निगम अध्यक्ष अशोक पोरवाल, भाजपा अध्यक्ष अनीता कटारिया, पूनम बहन, ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. सीमा तथा अन्य।

वार्शी-महा.। आदरणीय पंडित गोवत्स राधाकृष्णजी महाराज,जोधपुर,राज. के सेवाकेन्द्र में आने पर आयोजित सम्मान समारोह में वे सम्बोधित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. सदीक्षा, ब्र.कु. राणी तथा ब्र.कु. अनिता।

खिलचीपुर-म.प्र.। राज्य पेंशनर्स संघ खिलचीपुर के संभागीय सम्मेलन में उपस्थित हैं ब्र.कु. तेजस्विता, एस.डी.एम. प्रवीण प्रजापति, पेंशनर्स संघ के सम्भागीय अध्यक्ष एस.पी. सिंह, उपाध्यक्ष किशोरीलाल शर्मा एवं गोपाल सिंह राठोर, प्रान्तीय महामंत्री रावत सा., पेंशनर्स संघ के जिलाध्यक्ष दिनेश नागर, नगर पंचायत अध्यक्ष डॉ. दीपक नागर, लायंस क्लब अध्यक्ष श्यामसुंदर गुप्ता, नगर के प्रतिष्ठित नागरिक ओम प्रकाश शर्मा तथा अन्य।

ग्वालियर-सिटी सेंटर। प्रशासक अभियान के अंतर्गत आध्यात्मिकता द्वारा स्व-सशक्तिकरण विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विपुल। मंचासीन हैं ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. बहादुर, ब्र.कु. पंचम सिंह, बी.वी.एम.महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एन.एन. साहू व अन्य।

मुम्बई-थाणे। हैंगिंग गार्डन के उद्घाटन कार्यक्रम में संजीव जयसवाल, कमिश्नर,थाणे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सीता तथा ब्र.कु. हर्षा। साथ हैं मनोज शिंदे,जिला कांग्रेस प्रेसीडेंट व तुकाराम शिंदे,बिल्डर।

हे अर्जुन, ये अंधविश्वास नहीं, यह ज्ञान एक विज्ञान है

गतांक से आगे...

अब तक भगवान ने विभिन्न तरीके से अर्जुन को समझाना चाहा कि किस प्रकार अपने मन को वो नियंत्रित कर सकता है। फिर भी अगर उसको कठिन लगे तो कैसे समर्पण भाव को अपनाना ज़रूरी है। परमात्मा हम सभी के सर्व मानसिक बोझ को उठाने के लिए तैयार है। भगवान यही चाहते हैं कि मनुष्य अपना कर्तव्य करते हुए भी, सर्व प्रकार के मानसिक बोझ को उस परमात्मा को सौंप दे। बुद्धि को समर्पण करते हुए अपना नित्य कर्म करता जाये। समर्पण भाव भी तभी आएगा जब ईश्वर का वास्तविक स्वरूप हमारे सामने स्पष्ट हो। इसलिए जैसे अर्जुन भी साधारण स्वरूप में ईश्वर को देख रहा था तो भगवान को बार-बार अपने वास्तविक स्वरूप के तरफ इशारा करना पड़ा कि मेरा वास्तविक स्वरूप सूक्ष्म से सूक्ष्म, अणु से भी सूक्ष्म दिव्य ज्योतिर्मय प्रकाश स्वरूप है। परमात्मा का जो वास्तविक धाम है वो परमधाम है।

नौवें अध्याय में भगवान ने राजविद्या, गुह्य योग को स्पष्ट किया। आत्मा और परम आत्मा के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन इस अध्याय के अंतर्गत किया गया है। पहले श्लोक से लेकर छठें श्लोक तक प्रभाव सहित ज्ञान का विषय बताया गया है।

सातवें श्लोक से लेकर दसवें श्लोक तक कल्प का प्रारंभ और अंत का विषय लिया गया है। कल्प के विषय में बताया कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर, कलियुग ये चारो युग मिलकर एक कल्प होता है। कल्प के प्रारंभ और अंत में क्या होता है? उसका विषय स्पष्ट किया गया है।

ग्यारहवें श्लोक से लेकर पंद्रहवें श्लोक तक आसुरी प्रकृति के लोग और दैवी प्रकृति के लोगों की भिन्नता स्पष्ट की गई है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सोलहवें श्लोक से लेकर बीसवें श्लोक तक की भगवान की तुलना सभी में सर्वोच्च स्वरूप में की गई है। इक्कीसवें श्लोक से लेकर पच्चीसवें श्लोक तक सकाम और निष्काम उपासना का फल और छब्बीस से चौतीसवें श्लोक तक निष्काम भगवत् भक्ति की महिमा और मनमनाभव, मध्याजीभव होने की प्रेरणा दी है।

सर्वप्रथम भगवान यही बात स्पष्ट करते हैं कि हे अर्जुन! इस परम गोपनीय ज्ञान को भी मैं ज्ञान सहित कहूंगा। अर्थात् ये ज्ञान कोई अंधविश्वास का ज्ञान नहीं है, लेकिन ये ज्ञान एक विज्ञान है। जहाँ हर बात के पीछे कोई न कोई रूप से तर्क स्पष्ट किया गया है। यह ज्ञान सभी विद्याओं का राजा है। इसीलिए उसको राजयोग कहा जाता है।

संसार में ज्ञान की अनेक शाखायें हैं, लेकिन उन सभी विद्याओं का राजा राजयोग को कहा गया है। यह गोपनीय रहस्यों से भी अधिक गोपनीय है। ये परम पवित्र ज्ञान है। क्योंकि ये स्व की प्रत्यक्ष अनुभूति का बोध कराता है। यह धर्म का भी आदर्श है। यह स्थायी तथा प्रसन्नता पूर्वक धारण किया जाने वाला है। यह ज्ञान प्रैक्टिकल से प्रैक्टिकल है। जिसके लिए कोई ये नहीं कह सकता है कि ये ज्ञान धारण करना मेरे लिए मुश्किल है। मुश्किल नहीं है लेकिन जो इस रहस्य को समझता है तो उसके लिए धारण करना आसान हो जाता है।

भगवान अपनी कार्य करने की प्रणाली के विषय में बताते हुए कहते हैं कि मैं अव्यक्त स्वरूप हूँ, और मेरी कार्य प्रणाली अलौकिक है। फिर से भगवान गुप्त रूप में इशारा दे रहे हैं। अभी तक भी वो अव्यक्त को समझ पाने की क्षमता नहीं रख पाता है। जैसे आज की दुनिया में कई बार कई लोग यही सोचते हैं कि अव्यक्त को कैसे हम समझें। तो इसीलिए भगवान अपने कार्य के आधार पर भी अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हैं कि मेरी कार्य प्रणाली अलौकिक है। जो भी पदार्थ इस दुनिया में रचे गए हैं, वो मेरे भीतर नहीं हैं। सर्वव्यापकता की भी बात यहाँ स्पष्ट की जा रही है। मैं सभी चैतन्य प्राणियों का पालनहार ज़रूर हूँ। परमात्मा जो हर आत्मा की पालना करते हैं। ये कर्म उनको बांधते नहीं हैं, क्योंकि उनकी उसमें आसक्ति नहीं है। - क्रमश:

मानव आत्म सम्मान... - पेज 2 का शेष

खोजकर खुद को सजग व तरोताज़ा रखता है। बासी होने नहीं देता।

मध्यम वर्ग के नौकरी करने वाले मनुष्य बासी बन जाते हैं। जैसे कि सुबह उठना, समाचार पत्र पढ़ना, चाय-नास्ता करना, छोटी-मोटी पूजा करना, हिसाब-किताब करना, भोजन करना, ऑफिस जाना, साथियों के साथ गप-शप करना, थोड़ा सा कार्य करना, बॉस या कार्य साथी की शिकायत करना, बढ़ती महंगाई, भ्रष्ट नेताओं की टीका-टिप्पणी करना, सायं मंदिर में जाकर आना, साग-सब्जी खरीद करना, टी.वी. सीरियल देखना और सो जाना, यही लगभग नित्यक्रम बन जाता है। परिणामस्वरूप वे ज़िंदगी में नवीनता, ताज़गी, उमंग-उत्साह खो देते हैं। बहुत लोगों की जीवन-यात्रा में आई समस्याएँ, परिक्षायें, कठिन क्षणों में 'हाय मर गया', 'सब लुट गया', 'बर्बाद हो गया', जैसी रोने की आदत सी बनी रहती है।

आज मनुष्य वाहन का संतुलन बनाये रखने में कामयाब है लेकिन जीवन का संतुलन बनाये रखने में कमज़ोर है। जीवन में दु:ख तो आयेंगे ही, लेकिन दु:ख के क्षणों में स्वस्थ रह दु:ख का सामना करना, ये आधारभूत शिक्षा है। जीवन कैसे जीना है ये भी एक कला है। परंतु ये कला भी उधार लेने का शौक मनुष्य को चढ़ा हुआ है। इसलिए धार्मिक लोगों के पास, साधू, संतों के पास जीवन जीने की 'कला' सिखाने वाले ट्रेनर्स के पास दौड़ता-भागता रहता है। परिणामस्वरूप सिद्धांतों को समझने में ही स्वयं की शक्ति को क्षीण करता है।

वास्तव में आत्मज्ञान जैसा कोई राहगीर नहीं है। पवित्रता जैसा कोई मोक्ष नहीं है, हरेक के प्रति शुभ-भावना, करुणा व सेवाभाव जैसी कोई शक्ति नहीं है। ऐसी समझ पैदा करने के लिए हर रोज़ स्वयं से बात करने के लिए समय निकालना चाहिए। मनुष्य सारे विश्व की बातों में बहुत समय वेस्ट करता है, लेकिन स्वयं को संभालने की उत्सुकता ही नहीं रखता। बूढ़ा होने पर ही परमात्मा को याद करने का समय है, ऐसा आरक्षित समय रखना किसी भी धर्म में नहीं लिखा है। परमात्मा द्वारा प्रदान किये गये क्षण-क्षण परम शक्ति का प्रसाद समझ और उनकी इज़्ज़त रख प्रसन्नता पूर्वक स्वयं के कार्यों एवं जवाबदारी को निष्ठापूर्वक अदा करना ही सच्ची सेवा है। 'अर्थ' के सिवा सब व्यर्थ है, ऐसी संकीर्ण विचारधार ने विराट मनुष्य को कमज़ोर बनाकर रखा है। कबीर ने कहा है - 'हे मानव भीतर की चीज़ तुझे नहीं दिखती' और उसे ढूंढ़ने के लिए बाहर दौड़-भाग कर रहा है। आत्मज्ञान के बिना काशी दौड़ या मथुरा का गमन, सब व्यर्थ है।

ख्यालों के आईने में...

कथा सरिता

मन का दर्पण

एक गुरुकुल के आचार्य अपने शिष्य की सेवा से बहुत प्रभावित हुए। विद्या पूरी होने के बाद जब शिष्य विदा होने लगा तो गुरू ने उसे आशीर्वाद के रूप में एक दर्पण दिया। वह साधारण दर्पण नहीं था। उस दिव्य दर्पण में किसी भी व्यक्ति के मन के भाव को दर्शाने की क्षमता थी।
शिष्य गुरू के इस आशीर्वाद से बड़ा प्रसन्न था। उसने सोचा कि चलने से पहले क्यों न दर्पण की क्षमता की जांच कर ली जाए। परीक्षा लेने की जल्दबाज़ी में उसने दर्पण का मुँह सबसे पहले गुरूजी के सामने कर दिया। शिष्य को तो सदमा लग गया। दर्पण यह दर्शा रहा था कि गुरुजी के हृदय में मोह, अहंकार, क्रोध आदि दुर्गुण स्पष्ट नज़र आ रहे हैं।
मेरे आदर्श, मेरे गुरूजी इतने अवगुणों से भरे हैं! यह सोचकर वह बहुत दु:खी हुआ। दु:खी मन से वह दर्पण लेकर गुरुकुल से रवाना तो हो गया लेकिन रास्ते भर उसके मन में एक ही बात चलती रही कि जिन गरूजी को मैं समस्त दुर्गुणों से रहित एक आदर्श पुरूष समझता था, लेकिन दर्पण ने तो कुछ और ही बता दिया।
उसके हाथ में दूसरों को परखने का यंत्र आ गया था, इसलिए उसे जो मिलता उसकी परीक्षा ले लेता। उसने अपने कई इष्ट मित्रों तथा अन्य परिचितों के सामने दर्पण रखकर उनकी परीक्षा ली। सबके हृदय में कोई न कोई दुर्गुण अवश्य दिखाई दिया। जो भी अनुभव रहा सब दु:खी करने वाला। वह सोचता जा रहा था कि संसार में सब इतने बुरे क्यों हो गए हैं। सब दोहरी मानसिकता वाले लोग हैं। जो दिखते हैं दरअसल वे हैं नहीं। इन्हीं निराशा से भरे विचारों में डूबा दु:खी मन से वह किसी तरह घर तक पहुंच गया।
उसे अपने माता-पिता का ध्यान आया। उसके पिता की तो समाज में बड़ी प्रतिष्ठा है। उसकी माता को तो लोग साक्षात देवतुल्य ही कहते हैं। इनकी परीक्षा की जाए।
उसने उस दर्पण से माता-पिता की भी परीक्षा कर ली। उनके हृदय में भी कोई न कोई दुर्गुण देखा। ये भी दुर्गुणों से पूरी तरह मुक्त नहीं हैं। संसार सारा मिथ्या पर चल रहा है। अब उस बालक के मन की बेचैनी सहन के बाहर हो चुकी थी। उसने दर्पण उठाया और चल दिया गुरुकुल की ओर। शीघ्रता से पहुंचा और सीधा जाकर अपने गुरुजी के सामने खड़ा हो गया। गुरूजी उसके मन की बेचैनी देखकर सारी बात का अंदाज़ा लगा चुके थे।
शिष्य ने गुरुजी से विनम्रतापूर्वक कहा - गुरूदेव, मैंने आपके दिए दर्पण की मदद से देखा कि सबके दिलों में तरह-तरह के दोष हैं। कोई भी दोषरहित सज्जन मुझे अभी तक क्यों नहीं दिखा? क्षमा के साथ कहता हूँ कि स्वयं आपमें और अपने माता-पिता में मैंने दोषों का भंडार देखा। इससे मेरा मन बड़ा व्याकुल है।
तब गुरूजी हँसे और उन्होंने दर्पण का रुख शिष्य की ओर कर दिया। शिष्य दंग रह गया। उसके मन के प्रत्येक कोने में राग-द्वेष, अहंकार, क्रोध जैसे दुर्गुण भरे पड़े थे। ऐसा कोई कोना ही न था जो निर्मल हो।
गुरूजी बोले - बेटा, यह दर्पण मैंने तुम्हें अपने दुर्गुण देखकर जीवन में सुधार लाने के लिए दिया था, ना कि दूसरों के दुर्गुण खोजने के लिए। जितना समय तुमने दूसरों का दुर्गुण देखने में लगाया, उतना समय यदि तुमने स्वयं को सुधारने में लगाया होता तो अब तक तुम्हारा व्यक्तित्व बदल चुका होता। मनुष्य की सबसे बड़ी कमज़ोरी यही है कि वह दूसरों के दुर्गुण जानने में ज़्यादा रुचि रखता है। स्वयं को सुधारने के बारे में नहीं सोचता। इस दर्पण की यही सीख है जो तुम नहीं समझ सके। यदि हम स्वयं में थोड़ा-थोड़ा करके सुधार करने लगें तो हमारा व्यक्तित्व परिवर्तित हो जाएगा।

बेशकीमती तोहफा

एक 16 साल के लड़के ने अपनी मम्मी से पूछा कि मम्मी, मुझे 18वें साल के जन्मदिन पर क्या गिफ्ट दोगी? तो उस लड़के की मम्मी ने उससे कहा कि जब तेरा 18वां साल आएगा तो आलमारी के अंदर देख लेना, उसमें तेरा गिफ्ट रहेगा। अभी बता दूंगी तो गिफ्ट का मज़ा नहीं आएगा। कुछ दिन बाद वो लड़का बीमार हो गया। उसके मम्मी पापा उसको अस्पताल लेकर गए। जाँच के बाद डॉक्टर ने लड़के के माता पिता से कहा कि इसके दिल में छेद है, अब ये 2 महीने से ज़्यादा नहीं जी पायेगा।

2 साल भर बात लड़का ठीक होकर घर गया तो उसे पता चला कि उसकी माँ नहीं रही। उसे ये पता चलते ही उसने आलमारी खोली और उसने देखा कि आलमारी में एक गिफ्ट पड़ा था। उसने जल्दी से वो गिफ्ट खोला, तो उस गिफ्ट में एक चिट्ठी थी। उस चिट्ठी में लिखा था कि ''मेरे जिगर के टुकड़े, अगर तू ये चिट्ठी पढ़ रहा है तो तू बिल्कुल ठीक होगा। तूझे याद है कि जब तू बीमार हुआ था तब हम तुझे अस्पताल लेकर गए थे। डॉक्टर ने कहा कि तेरे दिल में छेद है, तो उस दिन मैं बहुत रोई और फैसला किया कि मेरा दिल तुझे दूंगी। याद है एक दिन तूने कहा था कि मम्मी मुझे 18वें साल के जन्मदिन पर क्या दोगी, तो बेटा, मैं तुझे अपना दिल दे रही हूँ, उसको हमेशा संभाल कर रखना। हैप्पी बर्थ डे बेटा''।
एक माँ इसलिए मर गयी क्योंकि उसका बेटा जी सके। दुनिया में माँ से बड़ा दिल किसी का नहीं। माँ के दिल जैसा दुनिया में कोई दिल नहीं।

पानी का ग्लास

एक बार किसी रेलवे प्लैटफॉर्म पर जब गाड़ी रुकी तो एक लड़का पानी बेचता हुआ निकला। ट्रेन में बैठे एक सेठ ने उसे आवाज़ दी, ऐ लड़के इधर आ। लड़का दौड़कर आया। उसने पानी का गिलास भरकर सेठ की ओर बढ़ाया तो सेठ ने पूछा, कितने पैसे में? लड़के ने कहा, पच्चीस पैसे। सेठ ने उससे कहा कि पंद्रह पैसे में देगा क्या? यह सुनकर लड़का हल्की मुस्कान दबाए पानी वापस घड़े में उड़ेलता हुआ आगे बढ़ गया। उसी डिब्बे में एक महात्मा बैठे थे, जिन्होंने यह नज़ारा देखा था कि लड़का मुस्कराया पर मौन रहा। ज़रूर कोई रहस्य उसके मन में होगा। महात्मा नीचे उतरकर उस लड़के के पीछे-पीछे गए। बोले, ऐ लड़के, ठहर ज़रा, यह तो बता कि तू हँसा क्यों? वह लड़का बोला, महाराज! मुझे हँसी इसलिए आई कि सेठजी को प्यास तो लगी ही नहीं थी, वे तो केवल पानी के गिलास का रेट पूछ रहे थे। महात्मा ने पूछा, लड़के, तुझे ऐसा क्यों लगा कि सेठजी को प्यास लगी ही नहीं थी। लड़के ने जवाब दिया, महाराज! जिसे वाकई प्यास लगी हो वह कभी रेट नहीं पूछता, वह तो गिलास लेकर पहले पानी पीता है, फिर बाद में पूछेगा कि कितने पैसे देने है? पहले कीमत पूछने का अर्थ हुआ कि प्यास लगी ही नहीं है। वास्तव में जिन्हें ईश्वर और जीवन में कुछ पाने की तमन्ना होती है, वे वाद-विवाद में नहीं पड़ते। पर जिनकी प्यास सच्ची नहीं होती, वे ही वाद-विवाद में पड़े रहते हैं। वे साधना के पथ पर आगे नहीं बढ़ते। अगर खुदा नहीं है तो उसका ज़िक्र क्यों? और अगर खुदा है तो फिर फिक्र क्यों?

खिलचीपुर-म.प्र.। 'स्वच्छ समाज स्वस्थ समाज अभियान' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष हिमांशु गुप्ता, महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी रुबीना मिजवानी, ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. नम्रता तथा अन्य।

भुज-गुज.। कच्छ युनिवर्सिटी में 'फीयर ऑफ एक्ज़ाम' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में प्रोफेसर्स तथा स्टूडेंट्स के साथ ब्र.कु. अनुज, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. रक्षा, ब्र.कु. कौशल तथा ब्र.कु. गौतम।

भिलाई नगर-छ.ग.। बाल दिवस के अवसर पर प्रयास श्रवण दिव्यांग संस्था भिलाई के बच्चों के लिए आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं कमल दीक्षित,वरिष्ठ पत्रकार, ब्र.कु. आशा, गायत्री अग्रवाल,ट्रस्टी,प्रयास संस्था तथा राजेश पाण्डे,प्राचार्य,प्रयास स्कूल।

जबलपुर-म.प्र.। ट्रांसपोर्ट एंड ट्रैवल विंग द्वारा 'जर्नी ऑफ सक्सेस ऑन द व्हील्स ऑफ होप एंड हैप्पीनेस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ए.के. तिवारी,जनरल मैनेजर,व्हीकल फैक्ट्री, रामतनु साहा,डायरेक्टर,एयरपोर्ट, डी.पी.एस. राजपूत,ए.डी.एस.पी.,ट्रैफिक, ब्र.कु. सुरेश,मा.आबू, ए.के. शुक्ला, वित्तीय सलाहकार,प.म. रेलवे, विजय कुमार तिवारी,डायरेक्टर टेक्निकल,म.प्र. पॉवर ट्रांसमिशन कं., ब्र.कु. विमला व अन्य।

कोल्लम-केरल। नये सेवाकेन्द्र के निर्माण के लिए भूमि पूजन कार्यक्रम में उपस्थित हैं रामचन्द्र कडाकम्पल्ली,मिनिस्टर ऑफ पोर्ट, ब्रह्मश्री कणिप्पायुर परमेश्वरानाम बुथिरिपाडु,वास्तु स्पेशियलिस्ट, बालमुरली,आचार्य ऑफ पुथियाकावु टेम्पल, राजेन्द्र बाबु,मेयर एडवोकेट, ब्र.कु. बीना, ब्र.कु. पंकजाम कोट्टयम, ब्र.कु. उषा अदूर, ब्र.कु. मिनी, ब्र.कु. दिशा, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. रजनी तथा अन्य।

कोरबा-छ.ग.। सड़क दुर्घना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित यादगार दिवस के कार्यक्रम में उपस्थित हैं एम.पी. पटेल,यातायात प्रभारी, डॉ. के.सी. देबनाथ, ब्र.कु. रुक्मणि, ब्र.कु. राजेश,मा.आबू व अन्य।

नये साल में बनायें एक नया मिसाल

परिवर्तन की श्रृंखला कालजयी है। इस दुनिया में कुछ भी बदला तो ऐसे नहीं बदला। उसको बदलने के लिए सभी को एक साथ मिलकर बीस नाखूनों का ज़ोर लगा पूरे बल से प्रयास करना पड़ा। हमारा जीवन आज एक कठपुतली की तरह है, जिसकी डोर या तो परिवार या समाज या रिश्तेदार या परिस्थितियों के हाथ में है। जैसा जिसने दिखाया, जैसा जिसने हमें बनाया, जो हमें करने को कहा गया, वो बिना मन के हमने अभी तक किया और करते आ रहे हैं। आप अपने जीवन को देखकर पूछो कि क्या आप जो कर रहे हैं उससे आप संतुष्ट हैं! अगर हैं तो बहुत अच्छा, और अगर नहीं हैं तो उसके कारण की गहराई में चलते हैं।

हमारे सामने मिसालों के तौर पर वैसे तो बहुत सारी कहानियाँ हैं जिनको हमने सुना है कि कैसे अपनी दृढ़ता की शक्ति से कुछ आत्माओं ने समाज को पलटा दिया, फिर भी हम आपके सामने एक जीवंत, मार्मिक और मिसाल के तौर पर एक दृष्टांत प्रस्तुत करने जा रहे हैं, जिसको हमने अनुभव किया है। आप यह नहीं कहना कि ये तो आप उनका मिसाल दे रहे हैं जिनको आपने देखा है, लेकिन हम उदाहरण को प्रयोगात्मक तरीके से आपके सामने रखने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे सामने ब्रह्माकुमारी संस्था का ज्वलंत उदाहरण है। जिसमें दृढ़ता और हर पल नया करने का, और परिस्थितियों से न भागने का एक सर्वोत्तम उदाहरण मिल सकता है। ये सब बातें कहने से पहले हम ये बात आपको और स्पष्ट करना चाहेंगे कि कोई भी मिसाल बनने से पहले हमारे सामने एक बहुत बड़ा लक्ष्य या कुछ नया या कुछ अलग करने का जज़्बा होना चाहिए, तभी मिसालें बनती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक दादा लेखराज कृपलानी को जब एक लक्ष्य मिला, कुछ नया और कुछ अलग करने का, तो उन्होंने अपना सर्वस्व एक सेकण्ड में उस कार्य के प्रति झोंक दिया। उनके त्याग और बलिदान के वायब्रेशन्स से बहुत सारी आत्माओं ने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का बीड़ा उठाया। क्या आप सोच रहे हैं कि ये कार्य सहज था! अरे नहीं भाई, इसमें जो त्याग और बलिदान है, उसकी गाथा बहुत लम्बी है। जिसने भी दादा लेखराज का साथ देने की कोशिश की, उसको अपने परिवार से तिरस्कृत होकर, यातनाएँ सहकर, प्रताड़नायें

सहकर जीवन बिताना पड़ा। आपको पता है कि जब कोई व्यक्ति कुछ अलग करता है, तो उसके अलग करने में समाज उसका साथ नहीं देता। क्योंकि समाज हमेशा बिलीफ सिस्टम(मान्यता) के आधार से चलता है। उसमें नया नियम, नयी बात उसको स्वीकार्य नहीं होती। लेकिन समाज के इन ठेकेदारों से हमें ये बात पूछनी ज़रूर है कि आपको इन बातों का किसने अधिकार दिया कि आप जो कह रहे हैं वही सही है! स्वीकार्य तो वह बात होनी चाहिए जिसको सभी बिना किसी विरोध के मान लें। लेकिन सभी अपने कम्फर्ट ज़ोन (आराम तलब,अपने अनुकूल) में रहना चाहते हैं। थोड़ा भी परिवर्तन बर्दाश्त नहीं होता। लेकिन अगर परिवर्तन कुछ अच्छे के लिए हो रहा है, स्थायी हो रहा है, कल्याणकारी है, तो उसे अपनी बुद्धि से परखकर, उसमें कूद पड़ना ही समझदारी है, और यही हमारी ब्रह्माकुमारी बहनों ने किया। आज जिनको हम दादी कहते हैं, ये सारे शुरु में तो छोटी-छोटी कन्यायें ही थीं ना! लेकिन नये समाज के निर्माण के अति पुनीत कार्य में जब इन सबने एक बार छलांग लगाई तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज पूरे विश्व के लिए वे माननीय और पूजनीय हैं। इसी प्रकार यदि आप

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

क्रान्तिकारियों को देखो, देशभक्तों को देखो, उन्होंने भी आज़ादी की लड़ाई के लिए अपना सर्वस्व दिया, परिस्थितियों के वार से डरे नहीं, और वो किया जो आज किसी आम इंसान के सोच तक में भी नहीं आता।

अगर आपसे ये काम करने को कहा जाए, तो आप कहेंगे कि हम तो अपने परिवार को ही नहीं देख पाते, परिस्थितियों ने हमें जकड़ रखा है, हम कैसे कुछ नया और अलग करें। लेकिन हम कहते हैं कि, सभी के अपने परिवार थे, लेकिन सभी ने कुछ नया और अलग किया कि नहीं किया! आप अपने परिवार के लिए बोझ न बनें, अपने लिए कुछ नया और अलग करें। यह नये वर्ष में नयी मिसाल के तौर पर कायम करने की कोशिश करें।

ऐ पंछी, तू बैठकर क्यों आसमान देखता है।
उठ पंखों को खोल, क्योंकि ज़माना सिर्फ उड़ान देखता है।।
लहरों को तो शोर मचाने की आदत है।
लेकित मंज़िलें तो उसी की होती हैं जो नज़रों से तूफान देखता है।।

उपलब्ध पुस्तकें

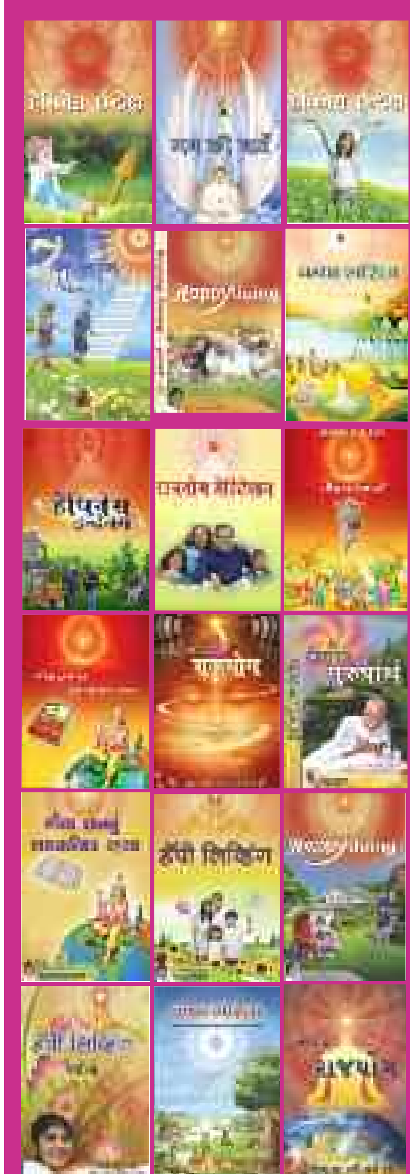

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न - नया वर्ष आ गया है...हम क्या नया करें...पुराने वर्ष में हमारा सब कुछ अच्छा नहीं रहा..कई बातें बार-बार याद आती हैं, जो हमारे पुरुषार्थ में बाधक हैं...हम उनसे मुक्त होना चाहते हैं।

उत्तर - पास्ट में लौटने की शक्ति तो किसी में भी नहीं है, परन्तु मनुष्य का मन बार-बार पास्ट में चला जाता है। इसका कारण है पकड़कर रखने की आदत, और यह आदत उनमें होती है जो सरलचित्त नहीं हैं। कुछ भी बात होने पर मनुष्य उसे पकड़कर बैठ जाता है, उसे छोड़ नहीं पाता। परिणाम यह होता है कि वह अंतर्मन में समाई हुई बुरी बात या बुरी घटना, सूक्ष्म रूप में निगेटिव तरंगें ब्रेन को भेजता रहता है जो कि मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। जो मनुष्य हर बात को भूल जाता है उसका मस्तिष्क निगेटिव एनर्जी से मुक्त रहता है। इसलिए भूलने में ही भला है।

याद रखेंगे...भगवानुवाच...श्रेष्ठ स्मृति से पुरानी स्मृतियाँ विस्मृत हो जाएंगी। अत: पास्ट को भूलने के लिए बार-बार श्रेष्ठ स्मृति अर्थात स्वमान का अभ्यास करना चाहिए।

नये वर्ष में उस एक बात को परिवर्तन कर दें जो बहुतकाल से कमज़ोरी के रूप में रही है। बस दृढ़ संकल्प करें कि ये करना है व ये नहीं करना है। सवेरे मन को उमंग दिलाने वाले विचारों से व अपने महान लक्ष्य की स्मृति से भरें इससे अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।

प्रश्न -मैं जब योग लगाता हूँ तो मन में बहुत ही व्यर्थ विचार आते हैं ...शान्ति मिलने के बजाय मन और ही दु:खी हो जाता है। जब मैं ज्ञान में आया तो बड़ा नशा था, लेकिन अब अवस्था गिरती ही जा रही है। मुझे डर लगता है कि व्यर्थ विचारों से मेरा पाप तो नहीं बनता?

उत्तर- व्यर्थ विचारों से पाप तो नहीं बनता परन्तु पाप का मार्ग तो खुल ही जाता है, क्योंकि इनसे मन निर्बल होने लगता है। आप जानते हैं कि विकारों ने व पाप ने ही मन का यह हाल किया है। सर्वप्रथम तो आप अपने अन्न को पवित्र करो। दूसरा, जहाँ भी आपको महसूस हो कि ये पाप है, उस कर्म या व्यापार को छोड़ दो, चाहे आपकी कमाई ज़्यादा हो। अपनी इच्छाओं को कम करने लगो व सभी के लिए चित्त में स्नेह व शुभभावना पैदा करो। अपने से कुछ प्रतिज्ञा भी करो तथा अमृतवेले उठो अवश्य। चाहे आपका योग न भी लगे, तो भी उठकर अव्यक्त मुरली पढ़ो व घूम फिरकर उस पर चिन्तन करो। योग में ज़्यादा बैठने के बजाय, सारा दिन दो बार प्रति घण्टा कुछ अभ्यास करो। इस प्रकार के अभ्यास हम मीडिया में बहुत से दे रहे हैं। इससे आपकी खुशी भी लौट आयेगी व मन शान्त रहने लगेगा। प्यारे भाई, एक अविनाशी सिद्धांत याद रखना, दूसरों को किसी भी तरह दु:ख देने वाले खुश नहीं रह सकते।

प्रश्न - आजकल कई विद्यार्थियों का मन काफी भटक रहा है। उनकी भी समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों हो रहा है। कई विद्यार्थी टी.वी. इंटरनेट आदि से भी दूर रहते हैं, परंतु फिर भी पढ़ाई में अपनी बुद्धि को एकाग्र नहीं कर पाते, इसका कारण व निवारण बतायें।

उत्तर- हाँ, आपने सत्य कहा। आज कई केस ऐसे ही आते हैं। इसके दो मुख्य कारण हैं। आजकल बच्चों में बारह-तेरह वर्ष से ही वासनाएं बहुत बढ़ने लगती हैं। वे मर्यादा वश अपनी वासनाओं की वृत्ति की तृप्ति तो नहीं कर पाते, परंतु ये वासना वृत्ति उनके मन को विचलित करती है। यदि कोई कुसंग में आकर वासना को तृप्त करने में लग जाते हैं तो इससे वासना शांत नहीं होती, बल्कि और अधिक बढ़ जाती है, और फिर युवकों का मन आत्मग्लानि से भर जाता है। वे वासनाओं के वश भी हो जाते हैं और पढ़ाई से उनका ध्यान हट जाता है।

दूसरा कारण है पूर्व जन्मों के विकार व विकर्म। वासनाओं को शान्त करने का व मन बुद्धि की एकाग्रता को बढ़ाने का एक ही मुख्य साधन है- राजयोग मेडिटेशन। जिन बच्चों ने राजयोग सीखा है, वे एक दस मिनट का छोटा सा अभ्यास प्रतिदिन करें। फ्रेश होकर शांत मन से बैठें। फिर दस सेकण्ड आत्मा के स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करें, तत्पश्चात् दस सेकण्ड परमात्मा के ज्योति स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करें, क्रमश: इसे दस मिनट तक करते रहें। अतिशीघ्र मन आनंदित रहने लगेगा व बुद्धि स्थिर हो जायेगी। सभी विद्यार्थियों को प्रात: सूर्योदय से पूर्व उठकर स्वयं के लिए थोड़ा समय अवश्य देना चाहिए। ये अभ्यास कभी भी किया जा सकता है। कभी भी ज्ञान-मुरली मिस न करो। भगवान ने स्वयं रूद्रज्ञान यज्ञ रचा है। तन, मन, धन से उसकी सेवा करो व सबको ज्ञान-दान दो, प्रभु पैगाम दो। मन, वचन, कर्म से किसी को दु:ख न दो। माया के सभी भूतों को जीतकर सर्व धर्मों की आत्माओं के लिए सम भाव व शुभ-भावना रखो। ये कुछ श्रीमत हमने बताये। धारणाओं की अन्य अनेक श्रीमत है। कौन कितना श्रीमत पर चलता है - यह उसके योग-युक्त जीवन से आँका जा सकता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133

शास्त्रों में चार युगों का वर्णन है, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। इन चारो युगों में चक्कर लगाने के बाद हमें एक ऐसे युग के साथ परमात्मा ने जोड़ा जिसमें हर क्षण, हर पल प्राप्तियाँ ही प्राप्तियाँ हैं। जिसे हमने पुकारा, हिमालय में ढूंढ़ा, चारो धाम की यात्राएँ की और जिसको पाने के लिए हमने तपस्याएँ की, वो स्वयं अभी हमारे साथ है, तो हमें उस अवसर का कितना लाभ ले लेना चाहिए! वो हमारे जीवन के साथ जुड़ गया, हमारा बोझ हर लिया। ना सिर्फ हमारा बोझ ले लिया अपितु हमें शक्तियाँ और बल प्रदान किया निरंतर आगे बढ़ने के लिए। ऐसे समय पर हम अपने आप को देखें कि जो भाग्यविधाता सबका भाग्य लिखता है, उसने हमारा भाग्य लिखने की कलम स्वयं हमारे ही हाथों में दे दी। तो देखिये हम क्या कर रहे हैं, उसका कितना लाभ उठा रहे हैं?

ये युग है बदलाव का...

- ब्र.कु. जगदीश,मा.आबू

इनको हम कुछ बिन्दुओं से समझने की कोशिश करते हैं

1. यह युग हमें वो सबकुछ दिला सकता है, लेकिन लेने के लिए बुद्धि की एकाग्रता बहुत ज़रूरी है।

2. परमात्मा इसको लीप युग भी कहते हैं, क्योंकि इसमें हमको छोटे से समय में सबकुछ, माना अपने बुरे कर्म, बुरे विचारों का दान करना होता है, और उसी समय स्वर्गिक सुख की प्राप्तियाँ करनी होती हैं। होता थोड़े समय में ही है सबकुछ, क्योंकि जिस समय आपको समझ मिली, आपका जीवन बदल गया।

3. आज मनुष्य अति विकारों की चपेट में है, उससे निकलना भी चाहता है, लेकिन कोई न कोई कारण, चाहे मोह या लोभ वश निकल नहीं पा रहा। ऐसे समय में ही वो पतित-पावन हमसे हमारा सबकुछ लेकर हमें पतित से पावन बनाना चाहता है।

4. जहाँ जीवन से आप थक गये थे, उसने आपके पाँव दबाने का जिम्मा उठाया, अर्थात् आपकी बुद्धि जो विभिन्न तरह की बातों में फँसी हुई है, उसके कारण थक गई है, उसकी थकान मिटाने का जिम्मा परमात्मा ने स्वयं उठाया।

5. हम आत्मायें छोटी-छोटी स्थूल बातों में, स्थूल कार्यों में अपने आपको उलझाकर छोटी-छोटी प्राप्तियों से भरपूर कर रहे थे, और भरपूरता लाने में जो

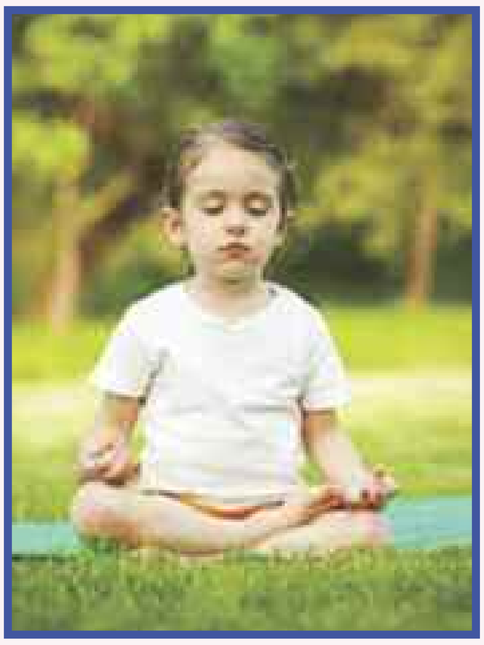

हमने विकर्म किये, उसका अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते! परमात्मा ने आकर हमें आत्मिक ज्ञान दिया, श्रेष्ठ ज्ञान दिया और कहा कि इसमें स्थित होकर तुम कर्म करो। कहा, प्राप्ति भी तुम्हारी, पहचान भी तुम्हारी और कोई पापकर्म भी नहीं।

6. दुनिया में जिसे लोग फरिश्तों की दुनिया कहते हैं, उसका दृश्यावलोकन परमात्मा ने हमारे समक्ष रखा है। हमारे आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा ने वो सबकुछ किया जिसे कोई आम इंसान सोच भी नहीं सकता, लेकिन उनसे करवाया स्वयं परमात्मा ने।

7. आज परमात्मा हमसे कहता कि आप एक कदम इस ओर बढ़ाओ, मैं हज़ार कदमों के साथ आपके साथ हूँ। ऐसा कौन कह सकता है, वही ना जो आपके बहुत नज़दीक हो, आपके बहुत करीब हो, उससे हमारा दु:ख, दर्द देखा नहीं जा सकता।

8. वो बस एक बात का इशारा देता है कि आप मेरे मार्ग पर चलकर तो देखो, आपको महान व सुप्रसिद्ध न कर दूँ तो कहना। प्रसिद्ध करने के लिए वो हमें बुला रहा है, और हम हैं कि एक कदम भी उठाने को तैयार नहीं। हम सभी आलस्य में पड़े हैं। आज जैसे दुनिया के लोग अपना डेली रुटीन करके घर में आकर बैठ जाते हैं, तो हममें और उनमें क्या अंतर है। कुछ तो अलग करो, कुछ तो नया करो, जिससे परमात्मा के दिल पर चढ़ो।

9. दुनिया बदल रही है, लोग बदल रहे हैं, परिस्थितियाँ बदल रही हैं, संबंध बदल रहे हैं, प्रकृति बदल रही है, अगर कोई नहीं बदल रहा है तो वो हैं हम और आप। कारण, हम दूसरों के बदलने का इंतज़ार कर रहे हैं। ये इंतज़ार आपको हमेशा करना पड़ेगा, क्योंकि संबंध हमसे है, समाज हमसे है, दुनिया हमसे है, परिवार हमसे है, परिस्थिति हमसे है, लेकिन हम इनसे नहीं हैं। अगर आप आने वाले समय में रोने से बचना चाहते हैं तो खुद पर फोकस करो। आप देखो, आप क्या कर रहे हो। आप दूसरों को देखने में इतना समय बिता रहे हो, जिसमें सबसे ज़्यादा वाट्स एप्प, यू ट्यूब, फेसबुक पर आपका सारा समय नष्ट हो रहा है, और ये सारी चीज़ें आपको उस परम सत्ता से विमुख करने के लिए ही हैं। तो जागो, उठो, और फिर ना रुको।

तपस्या के पथ पर...

- पेज 6 का शेष

करनी ही है। कर्म और योग साथ-साथ चले, ताकि कर्म हमें उलझाये नहीं और कर्म की अधीनता हममें चिड़चिड़ापन न लाये। अगर किसी तपस्वी को कोई क्रोध करता हुआ देखे तो उसको क्या कहेंगे -दुर्वासा ऋषि। वास्तव में ऋषि शब्द गलत है। दुर्वासा के साथ तो क्रोधी शब्द आना चाहिए। क्रोध दिनोदिन जवान होता जा रहा है, दूसरे शब्दों में कहें तो रावण जवान होता नज़र आता है। जब मनुष्य बूढ़ा होता है तो प्रैक्टिकल कर्म कम करता है और संकल्प बहुत चलाता है। हांथ-पांव तो चलता नहीं। लेकिन अनुभव ज़्यादा है तो क्रोध आ जाता है कि कहीं गलत न कर दे।

सहज भाव को अपनाएं

हमें अपने स्वभाव को सरल बनाने की आदत डालनी चाहिए। अगर इस कला को कोई सीख ले तो उसका जीवन सरल हो जाए। हमारा मन उलझा रहता है। अगर हमारा मन सरल हो जाए तो हमारी संकल्प शक्ति नष्ट होने से बच जाएगी। समस्या का भी समाधान होता चलेगा। जीवन को सरल करने के लिए मन को सरल करना ज़रूरी है। साथ ही यह चेकिंग करते रहें कि बातें हमारी संकल्प शक्ति को नष्ट तो नहीं करती? यह सबसे बड़ी शक्ति है। बाकी सब शक्तियां जैसे कि सहनशक्ति, समाने की शक्ति...आदि सब आ जाएंगी। कहीं कहीं, छोटी-छोटी बातों में संकल्प शक्ति का बड़ा नुकसान कर देते हैं।

लौकिक-अलौकिक जीवन सरल हो

साधना पथ पर हमारी तपस्या यथार्थ होगी तो हमारा जीवन सरल व सहज होता जाएगा। लेकिन देखने में आता है कि कइयों ने जीवन में तपस्या आरंभ की, वैसे-वैसे समस्या बढ़ी। इससे कई ब्राह्मण परेशान हुए। जैसे ही तपस्या की प्लानिंग की वैसे ही समस्याओं ने घेराव डाला। ऐसा भी होता है कइयों के जीवन में। एक मनोविज्ञान है या होमियोपैथी में दवाई देते हैं तो पहले बीमारी बढ़ जाती है, पीछे ठीक होती है। ठीक वैसे हमारी तपस्या प्रारंभ करते ही जो पाप के जर्म्स दबे हुए थे वह बाहर आने लगते हैं। पाप आया विदाई लेने, हिसाब-किताब चुक्तू करने के लिए और घबराकर तपस्या ही छोड़ दी कइयों ने। ऐसा होने पर घबराये नहीं, थोड़े समय के लिए ऐसा होगा। अगर समस्याएं बढ़ती देख किसी ने तपस्या छोड़ दी तो वह समस्या समाप्त नहीं हुई।

जीवन को सरल बनाएं

तपस्या हमारे जीवन को सरल बनाए। वह हमारे आनंद के लिए है। हमारी खुशी बढ़ती चले। मन-बुद्धि के भटकन से ऊपर उठ ईश्वरीय रसों का आनंद उठायें। सूक्ष्मता से अपने को देखें, निरीक्षण करें। अगर चेकिंग करेंगे तब पता चलेगा कि हमने कई किनारे पकड़े हुए हैं। सूक्ष्मता से निरीक्षण करें कि समस्या किनारों की वजह से तो नहीं। जिसके लिए ईश्वरीय महावाक्य हैं, किनारे हमारा साथ नहीं निभाएंगे, हमें वह सहारा नहीं देगा। जैसे किसी को अच्छा भोजन खाने के लिए चाहिए। अच्छा खाना तो ठीक है लेकिन भोजन खाने के पीछे हमारी शक्तियां नष्ट न हो रही हों। वह हमारा असली सहारा नहीं। ऐसे सहारों को समाप्त करना है। तपस्या में हमें चेक करना है कि कहाँ हमारी कर्मेन्द्रियां सहारों के रस में तो अटकी नहीं हैं। कौन-कौन से रस में हम लटके हुए हैं। उलझन के कारण क्या हैं? आज कल सुनने का रस बहुत हो गया है। इन्फॉर्मेशन बहुत ही नुकसान कर देती है। आज सभी घरों में टी.वी. आ गया है। यही माया की सूक्ष्म चाल है। इसके लिए बाबा ने कहा माया की चालबाज़ी का भी ज्ञान होना ज़रूरी है। जैसे हम संकल्प करें कि मैं आत्मा हूँ। तो मैं और मेरा, दोनों अलग स्पष्ट फीलिंग आये। आत्मा का दर्शन होता रहे। जिसका सहयोग भगवान कर रहा हो उनका सहयोग सारा संसार करेगा। तो भगवान हमारा है। यह नज़र आये, यही हमारी तपस्या है। यह जीवन उस परमात्म शक्ति के साथ मौजों में बीते, यही हमारी सेफ्टी का साधन होगा।

अहमदनगर-महा.। योगगुरू बाबा रामदेव को 1111 गुलाब के फूलों से बना गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके, ब्र.कु. राजेश्वरी तथा अभिनेत्री राजश्री लांडगे।

बड़वाह-म.प्र.। 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान' के अंतर्गत समाजसेवी संस्थाओं के लिए आयोजित स्नेह मिलन व विभिन्न संगठनों द्वारा समाज सेवा प्रभाग का सम्मान कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में मुक्ति धाम समिति के अध्यक्ष व वरिष्ठ समाजसेवी शुगनचंद रोकडिया, नगर पालिका उपाध्यक्ष गणेश पटेल, ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य संगठनों के सदस्य।

गांधीनगर-गुज.। देव दिवाली के अवसर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. अंजु, ब्र.कु. शिल्पा, ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. धर्मिष्ठा, पी.एम. परमार,पूर्व डायरेक्टर,सिविल सप्लाई, विक्रम पटेल,डायरेक्टर,नगर पालिका बैंक, नरेन्द्र शाह,वाइस चेयरमैन,नगर पालिका बैंक तथा शंकर भाई,सिटी चीफ,बी.जे.पी.।

छत्तरपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ एवं खुराना आई केयर सेंटर थैरो केयर सेंटर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय नि:शुल्क नेत्र जाँच एवं स्वास्थ्य परिक्षण शिविर का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए आई सेशियलिस्ट डॉ. कपिल खुराना, डॉ. आर.के. गुप्ता, ब्र.कु. शैलजा तथा ब्र.कु. माधुरी।

मुम्बई-घाटकोपर। मूल्य शिक्षण कार्यक्रम के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. निकुंज, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. शक्कू तथा अन्य।

समस्याओं का समाधान, संस्कार-संस्कृति परिवर्तन

- अलकापुरी सेवाकेन्द्र द्वारा कला संस्कृति महासम्मेलन संपन्न
- गुजराती फिल्म अभिनेत्री सहित कई गणमान्य अतिथि हुए शामिल

महासम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रांजल भट्ट, जितेन्द्र सुखडीया, ब्र.कु. सतीश, ए. वी. अस्टपुत्रे, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. दयाल, विनोद भाई, हितेश भाई, ब्र.कु. नरेन्द्र तथा अन्य।

वडोदरा-गुज.। अलकापुरी सेवाकेन्द्र में कला संस्कृति प्रभाग द्वारा 'कला संस्कृति महासम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

किसने क्या कहा...

'कलाकार अपनी कला के द्वारा समाज में प्रेरणा और संदेश दे सकते हैं। मैं पीस ऑफ माइन्ड चैनल में शिवानी बहन को सुनती हूँ। ये मुझे समझ में आया है कि कर्म ही प्रधान है। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा फल पायेंगे' - **गुजराती फिल्म की अभिनेत्री, निर्माता एवं निर्देशक प्रांजल भट्ट।**

'राजयोग द्वारा हम परिस्थिति सही रीति से सुलझा सकते हैं, ये मेरा अपना अनुभव है। ये राजयोग देश को आगे लाने में भी मदद करेगा' - **वडोदरा के धारासभ्य जितेन्द्र सुखडीया।**

'कला वो जो सबका भला करे, सबको साथ ले के चला करे। समाज में व्यापक आज की सर्व समस्याओं का समाधान संस्कार और संस्कृति परिवर्तन है। यह विद्यालय स्वर्णिम युग की संस्कृति के प्रति जागृति लाने का कार्य कर रहा है' **- ब्र.कु.सतीश,माउन्ट आबू।**

MSU के परफॉर्मिंग आर्ट्स कॉलेज के डीन ए. वी. अस्टपुत्रे ने कहा कि मैं एक कलाकार हूँ, कलाकार को रोज़ रीयाज़ करने की आवश्यकता रहती है। मैं मेरे सात कलाकार और 1200 स्टूडेन्ट्स के साथ जब कहो नि:शुल्क सेवा में उपस्थित रहने को तैयार हूँ।

'हाथों से काम करने वाले कामदार हैं। दिमाग से काम करने वाले कारीगर कहे जाते हैं, दिल से काम करने वाले कलाकार होते हैं। संसार भी एक नाटक है, जिसमें हम सभी एक्टर हैं। स्वयं निराकार परमात्मा शिव आकर जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं' **- वडोदरा अलकापुरी सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. डॉ. निरंजना।**

मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.दयाल ने कला संस्कृति प्रभाग की कार्यविधि सुनाई। विनय नृत्य कलाकेन्द्र के विनोद भाई तथा हितेशभाई शाह ने शुभेच्छा प्रदान की। ब्र.कु.नरेन्द्र ने सफल मंच संचालन किया। छत्तीसगढ़ से आये ब्र.कु. युगरतन तथा अहमदाबाद से आयी ब्र.कु. दामिनी ने अनेक सुंदर गीतों द्वारा वातावरण को अलौकिक बना दिया।

आध्यात्मिक गीतों पर सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुति देते कलाकार।

साथ ही बहुत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। ब्र.कु.मीना ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

न्याय में पारदर्शिता का आधार आध्यात्मिकता

- आध्यात्मिक सशक्तिकरण से होगा सामाजिक समस्याओं का निवारण
- कार्यक्रम में न्यायाधीश, वकील एवं न्याय क्षेत्र से जुड़े कई जाने माने लोग हुए शामिल

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ए.के. सीकरी, वी. ईश्वरैय्या, एम.वी. रमेश, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा, डॉ. गिरीश पटेल, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. लता, बी.एल. महेश्वरी तथा मुकेश आहुजा।

गुरूग्राम-ओ.आर.सी.। भारत ऐसा देश है जहाँ आध्यात्मिकता का विशेष स्थान है। आध्यात्मिक नेताओं और महात्माओं की ये उद्गम स्थली है। उक्त विचार सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति ए.के. सीकरी ने ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए 'स्प्रिच्युअलिटी फॉर जस्ट एंड पीसफुल सोसायटी' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता से ही न्याय प्रक्रिया में पारदर्शिता लाई जा सकती है। आध्यात्मिकता को जीवन में धारण करने से न्याय से जुड़े हुये सभी लोगों में प्रेम, दया और शांति जैसे मूलभूत गुणों का विकास होगा। उन्होंने आगे कहा कि भगवान ने जब हमें बनाया तो सभी आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न किया था, लेकिन धीरे-धीरे भौतिक जगत के प्रभाव के कारण हमारी वो शक्तियाँ क्षीण होती गईं। उन्होंने कहा कि यहाँ आकर मुझे एक अद्भुत ऊर्जा का अनुभव हो रहा है।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. ईश्वरैय्या ने कहा कि जब हमारा भारत देश आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न था तो सोने की चिड़िया कहलाता था। लेकिन आज उन मूल्यों की कमी के कारण देश की हालत बहुत ही नाज़ुक दौर से गुज़र रही है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही समाज का विकास संभव है।

सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार न्यायमूर्ति एम.वी. रमेश ने कहा कि आध्यात्मिकता ही जीवन का मुख्य सार है। बिना आध्यात्मिकता के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

'हमारे संविधान व न्याय प्रक्रिया में प्राय: दो शब्दों का विशेष महत्व है, सत्यमेव जयते और अहिंसा परमोधर्म। वास्तव में इन दोनों शब्दों में आध्यात्मिकता समाई हुई है। आध्यात्मिकता हमें स्वयं से जोड़ती है। स्वयं का बोध होने से ही जीवन सुख-शांति से भर जाता है' **- ब्रह्माकुमारीज़ के अति. सचिव ब्र.कु. बृजमोहन।**

'योग ही एक ऐसा माध्यम है, जिससे जीवन में आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है' **- ब्र.कु. आशा।**

कार्यक्रम में मुम्बई से आए सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. गिरीश पटेल ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। दिल्ली करोलबाग सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. पुष्पा ने कहा कि इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करना है।

जोधपुर से आए प्रसिद्ध वकील बी.एल. महेश्वरी ने न्यायविदों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाओं का विस्तार से वर्णन किया।

दिल्ली से आए प्रसिद्ध वकील मुकेश आहुजा ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध वकील ब्र.कु. लता ने किया।

शक्तिशाली एवं सकारात्मक विचारों से बनता जीवन खुशनुमा

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। मन के शक्तिशाली एवं सकारात्मक विचारों से अनेक शारीरिक बीमारियाँ भी ठीक हो जाती हैं। मन की सकारात्मक ऊर्जा हमारे सम्बंधों को भी बेहतर बनाती है। उक्त विचार मुम्बई से आए प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. गिरीश पटेल ने सनसिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सेक्टर-54, गुरूग्राम में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'शान्ति के अद्भुत अनुभव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि जितना हम स्वयं को जानते हैं, अपने आपसे बातें करते हैं। उतना ही हमें अपनी क्षमताओं का पता लगता है। स्वयं की क्षमताओं का पूर्ण विकास न होना भी तनाव का कारण बन जाता है, राजयोग हमारी आन्तरिक शक्तियों का पूर्ण विकास कर उन्हें जागृत करता है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि आज लोग खुशी बाहरी चीज़ों में ढूढ़ते हैं, लेकिन वास्तव में खुशी तो आत्मा का स्वाभाविक गुण है। जितना हम अपने आत्मिक भान में रहते हैं उतना हममें स्वत:ही खुशी का संचार होता है।

कार्यक्रम के दौरान विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी। ध्यानपूर्वक सुनते हुए शहर के गणमान्य जन।

उन्होंने कहा कि भौतिक चीज़ों की खुशी विनाशी है। जैसा आहार होता है वैसा ही व्यवहार बन जाता है। भोजन का हमारे मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि आज जो कुछ भी हम हैं, हमारे अपने कर्मों का ही परिणाम है। मनुष्य धन कमाने के पीछे लगा रहता है लेकिन दुआएं कमाने की नहीं सोचता। वास्तव में असली कमाई दुआएं कमाना है।

कार्यक्रम के प्रति राजस्थान हाई कोर्ट के पूर्व जस्टिस एस.एन. झा एवं गुरूग्राम के अतिरिक्त उपायुक्त विनय प्रताप सिंह ने भी अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त की।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Dec 2016
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।